Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰھُمَّ مٰلِکَ الْمُلْکِ تُؤْتِی الْمُلْکَ مَنْ تَشَآءُ
وَتَنْزِعُ الْمُلْکَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِیَدِکَ الْخَیْرُ ؕ

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवादः तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 23

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

2 शव्वाल 1440 हिजरी कमरी 6 इहसान 1397 हिजरी शमसी 6 जून 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

इस्राईली सिलसिला का आख़िरी ख़लीफ़ा जो चौदहवीं सदी पर मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आया वह मसीह नासरी अलैहिस्सलाम था। मुक़ाबला में ज़रूर था कि इस उम्मत का मसीह भी चौदहवीं सदी के सिर पर आए। इस के अतिरिक्त अहले कशफ़ ने इसी सदी को बेअसत मसीह का ज़माना क़रार दिया जैसे शाह वली उल्लाह साहिब रहमहुल्लाह इत्यादि।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हर एक आदमी आख़िरत के सफ़र की तैयारी रखे।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:।

इस वक़्त मेरी उद्देश्य वर्णन करने से यह है कि चूँकि इन्सान की ज़िन्दगी का कुछ भी भरोसा नहीं। इसलिए जितने लोग इस वक़्त मेरे पास जमा हैं। मैं ख़्याल करता हूँ शायद अगले साल सब जमा ना हो सकें और इन्हीं दिनों में मैंने एक कशफ़ में देखा है कि अगले साल कुछ लोग दुनिया में ना होंगे। यद्यपि मैं यह नहीं कह सकता कि इस कशफ़ के मिस्दाक़ कौन कौन लोग होंगे। और मैं जानता हूँ कि यह इसलिए है ताकि हर एक आदमी बजाए ख़ुद सफ़र आख़िरत की तैयारी रखे। जैसा कि मैंने अभी कहा है कि मुझे किसी का नाम नहीं बतलाया गया। लेकिन यह मैं अल्लाह तआला के बताने से ख़ूब जानता हूँ कि क़ज़ा तथा क़दर का एक वक़्त है और ज़रूर एक वक़्त इस फ़ानी दुनिया को छोड़ना है इसलिए यह कहना बहुत ज़रूरी पड़ा हुआ है कि हर आदमी और हर दोस्त जो इस वक़्त मौजूद है वह मेरी बातों को क़िस्सा सुनाने वाले की दास्तान की तरह ना समझे। बल्कि यह एक अल्लाह तआला की तरफ़ से उपदेशक और अल्लाह की तरफ़ से मामूर है जो निहायत ख़ैर ख़्वाही और सच्ची भलाई और दिल की गहराई से से बातें करता है।

अल्लाह तआला के वजूद पर ईमान

अत: मैं अपने दोस्तों को सूचना देता हूँ कि ख़ूब याद रखो। मैं फिर कहता हूँ कि दिल से सुनो और दिल में जगह दो कि अल्लाह जैसा उसने अपनी किताब क़ुरआन करीम में अपने वजूद और तौहीद को पर ज़ोर और आसान दलीलों से साबित किया है। एक उच्चतम हस्ती और नूर है। वे लोग जो इस ज़बरदस्त हस्ती की क़ुदरतों और आश्चर्यों को देखते हुए भी इस के वजूद में शंकाए ज़ाहिर करते और शक करते हैं। सच जानो।बड़े ही बद-क़िस्मत हैं। अल्लाह तआला ने अपनी ज़बरदस्त हस्ती और मुक़तदिर वजूद के बारे में ही फ़रमाया है

اَفِی اللّٰہِ شَکٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

(इब्राहीम :11) क्या अल्लाह तआला के वजूद में भी शक हो सकता है जो ज़मीन तथा आसमान का पैदा करने वाला है? देखो यह तो बड़ी सीधी और साफ़ बात है कि एक सृजन को देखकर स्रष्टा को मानना पड़ता है। एक उच्चम जूते या संदूक़ को देखकर उस के बनाने वाले की ज़रूरत को शीघ्र स्वीकार करना पड़ता है। फिर आश्चर्य पर आश्चर्य है कि अल्लाह तआला की हस्ती में क्योंकर इन्कार की गुंजाइश हो सकती है। ऐसे स्रष्टा के वजूद का इन्कार क्योंकर हो सकता है जिसके हज़ारों आश्चर्य से ज़मीन और आसमान भरे हैं। अत: अवश्य समझ लो कि इन क़ुदरत के आश्चर्यों और सृष्टियों को देखकर भी जिन में इन्सानी हाथ इन्सानी अक़्ल तथा दिमाग़ का काम नहीं अगर कोई बेवक़ूफ़ ख़ुदा की हस्ती और वजूद में शक लाए तो वे बदक़िस्मत इन्सान शैतान के पंजा में गिरफ़्तार है और इस को इस्तिग़फ़ार करना चाहिए। ख़ुदा की हस्ती का इन्कार दलील और देखने के आधार पर नहीं बल्कि प्रताप वाले अल्लाह तआला का इनकार करना बावजूद देखने के उस की क़ुदरतों और अजाइबात मख़लूक़ात और सृष्टियों के जो ज़मीन तथा आसमान में भरे पड़े हैं। बड़ा ही अन्धापन है।

अन्धेपन की दो किस्में हैं। एक आँखों का अन्धापन है और दूसरा दिल की। आँखों के अन्धा का असर ईमान पर कुछ नहीं होता मगर दिल के अन्धेपन का असर ईमान पर पड़ता है। इसलिए यह ज़रूरी है और बहुत ज़रूरी है कि हर एक आदमी अल्लाह तआला से पूरे विनय और विनम्रता के साथ हर समय दुआ मांगता रहे कि वह उसे सच्ची मार्फ़त और हक़ीक़ी बसीरत और ज्योति प्रदान करे और शैतान की शंकाओं से सुरक्षित रखे।

आख़रत पर ईमान

शैतान की शंकाएं बहुत हैं और सबसे ज्यादा ख़तरनाक शंका और शक जो इन्सानी दिल में पैदा हो कर उसे दुनिया तथा आख़रत में घाटा उठाने वाला कर देता है आख़िरत के बारे में है क्योंकि सारी नेकियों और सच्चाइयों का बड़ा भारी माध्यम समस्त तरीकों से के आख़िरत पर ईमान भी है और जब इन्सान आख़रत और इस की बातों को क़िस्सा और दास्तान समझे तो समझ लो कि वे रद्द हो गया और दोनों जहानों से गया गुज़रा हुआ। इसलिए कि आख़िरत का डर भी तो इन्सान को भयभीत और डरने वाला बना कर उस को मार्फ़त के सच्चे चश्मा की तरफ़ धीरे धीरे ले आता है और सच्ची मार्फ़त बग़ैर हक़ीक़ी भय और ख़ुदा तआला से डरने के हासिल नहीं हो सकती। अत: याद रखो कि आख़िरत के बारे में शंकाओं का पैदा होना ईमान को ख़तरा में डाल देता है और ख़ैर से ख़ातिमा में रुकावट आ जाती है।

अबरार का ज़िन्दगी का तरीका

जितने अबरार, नेक और सच्चे इन्सान दुनिया में हो गुज़रे हैं जो रात को उठकर क़ियाम और सज्दा में ही सुबह कर देते थे। क्या तुम ख़्याल कर सकते हो कि वे जिस्मानी क़ुव्वतें बहुत रखते थे। और बड़े बड़े शरीर वाले जवान और मज़बूत पहलवान थे? नहीं। याद रखो और ख़ूब याद रखो कि जिस्मानी क़ुव्वत और ताकत से वे काम हरगिज़ नहीं हो सकते जो रुहानी क़ुव्वत और ताक़त कर सकती है। बहुत से इन्सान आप लोगों ने देखे होंगे जो तीन , चार बार दिन में खाते हैं और ख़ूब लज़ीज़ और मुक़व्वी पेय पिलाओ इत्यादि खाते हैं मगर उस का नतीजा क्या होता है। सुबह तक ख़र्राटे मारते रहते हैं और नींद उन पर ग़लबा रखती है और यहां तक नींद और सुस्ती के पराजित हो जाते हैं कि उनको इशा की नमाज़ भी दो भर और मुश्किल काम मालूम होती है कहां वे तहज्जुद अदा करने वाले हों।

देखो! आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्माननीय सहाबा रिज़वानुल्ला अलैहिम अजमईन क्या आराम पसन्द और खाने पीने के शौकीन थे जो कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब थे? नहीं ये बात तो नहीं। पहली किताबों में भी उनके बारे में आया है कि वे रात को कम सोने वाले और दिन को रोज़े रखने वाले

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-13)

आजकल हम देखते हैं कि इन्सान ने अपने स्वार्थ की वजह से ख़ुद अपने लिए मुश्किलें और मसीबतें जमा की हुई हैं, इसके इलावा अल्लाह तआला की तरफ़ से भी आज़ाबों का सिलसिला बढ़ता चला जा रहा है, कहीं तूफ़ानों ने इन्सानों की बर्बादी के सामान किए हुए हैं तो कहीं भूखमरी ने इन्सानों की मुसीबतों और मुश्किलों में गिरफ़्तार किया हुआ है, जिन माध्यमों पर इन्सान को भरोसा था वे तबाह हो रहे हैं, अत: ऐसे में एक मोमिन को पहले से बढ़कर अल्लाह तआला की तरफ़ लौटने की ज़रूरत है।

जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है अल्लाह तआला हर एक मुसीबत में इस के लिए रास्ता बचने का मार्ग निकाल देता है

हमने अपने दिलों को पाक करना है, दिलों को पाक कर के अपने व्यावहारिक नमूनों से अपने माहौल को इस्लाम की ख़ूबियों के बारे में बताना है

अपने घरों के माहौल को पाक साफ़ रखना है, अपने आचरण को उच्च करना है, हर एक को अपनी ज़ात से तकलीफ़ पहुंचाने की बजाय सुविधाएं और आसानियां पहुंचाने के सामान करने हैं और हर आदमी तक इस्लाम और अहमदियत का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंचाना है।

जलसा सालाना बेल्जियम से सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक समापन ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

16 सितंबर 2018 ई (दिनांक इतवार)

जलसा सालाना बेल्जियम का तीसरा दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजे मार्की में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी ई और विभिन्न मामलों के बारे में दफ़्तरी कामों को में व्यस्त रहे। आज जमाअत अहमदिया बेल्जियम के जलसा सालाना का तीसरा और आख़िरी दिन था। प्रोग्राम के अनुसार 3 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जलसा गाह तशरीफ़ लाए और नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई।

जलसा सालाना बेल्जियम का समापन आयोजन

नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जलसा के समापन इज्लास के लिए जूंही स्टेज पर तशरीफ़ लाए तो सारा जलसा गाह पुरजोश नारों से गूंज उठा और लोगों ने बड़े जोश के साथ नारे बुलंद किए। प्रोग्राम के आरम्भ से पहले दो मेहमानों ने अपने विचारों को प्रकट किया।

*सबसे पहले मेम्बर यूरोपियन पार्लीमैंट Mrs. Lieve Wicrinck ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया। महोदया यूरोपियन कमेटी इंडस्ट्री, रिसर्च ऐंड एनर्जी की मेम्बर भी हैं। महोदया ने कहा : मुझे बहुत ख़ुशी है कि आज आपके प्रोग्राम में शामिल होने का अवसर मिला है। मैंने आपकी जमाअत से बारे में अपनी पार्टी के मेम्बरों से सुन रखा था। आपकी तरफ़ से दावत मिलने के बाद मैंने और रिसर्च की। आपकी जमाअत को दुनिया में एक अलग मुक़ाम हासिल है। आप अपनी इन्सानियत के लिए मुहब्बत , ख़िदमत ख़लक़ के कामों और अमन के पैग़ाम के लिए जाने जाते हैं। आपकी जमाअत बेल्जियम में एंटी गरीशन में भी मिसाली है और नए साल के आरम्भ पर वक़ार अमल के माध्यम से सफाई करके एक अलग प्राजेक्ट करती है।

मैं बहैसीयत यूरोपियन पार्लीमैंट मेम्बर अमन की कोशिशों में व्यस्त हूँ। हम ने यूरोप में दो बड़ी जंगें देखी हैं मगर अब हम कोशिश कर रहे हैं कि कोई और जंग हमें ना देखनी पड़े। आपका पैग़ाम उतना मिसाली है कि अगर दुनिया की बड़ी ताक़तें इस पर अमल करें तो दुनिया में अमन क़ायम हो सकता है। आख़िर पर दुबारा आपका और आपकी जमाअत का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ और उम्मीद रखती हूँ कि हम अमन की कोशिशें जारी रखेंगे।

*इस के बाद बर्सल्ज़ के पुलिस कमिशनर , चीफ़ पुलिस ऑफीसर Chistane De Konick ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा: सबसे पहले में आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आपने मुझे अपने प्रोग्राम में शामिल होने की दावत दी जिस की मुझे बड़ी ख़ुशी है। जब 22 मार्च 2016 को मालबीक के मेट्रो स्टेशन पर हमला हुआ था तो मैं उस वक़्त वहां इंचार्ज था। मैंने वह देखा जो मैं कभी नहीं देखना चाहता था और ना यह चाहता हूँ कि आप में से कोई देखे। लोगों ने मेरे पांव में आकर दम तोड़ा। मुझे मुसलमानों पर बहुत ग़ुस्सा था कि कोई इन्सान मज़हब के नाम पर कैसे दूसरे इन्सान को क़त्ल कर सकता है। मगर आप की जमाअत को जान कर, आप लोगों से मिलकर और आज आपके जलसा में शामिल हो कर मेरा मुसलमानों के बारे में दृष्टिकोण बदल गया है। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने मुझे दुबारा अमन की राह दिखाई है। आपके माटो मुहब्बत सबसे नफ़रत किसी से नहीं ने मेरे दिल पर बहुत गहरा असर छोड़ा है। आप के जलसा में मुझे एक विभिन्न इस्लाम देखने को मिला है। एक ऐसा इस्लाम जो अमन पसंद है। इस से मुझे बहुत सन्तोष हासिल हुआ।

इस के बाद 3 बजकर 40 मिनट पर जलसा के समापन इज्लास का बाक़ायदा आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय मुहम्मद मज़हर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला बेल्जियम ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद एहतिशाम हाश्मी साहिब ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहि-स्सलाम के मंजूम कलाम

वो पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है

में से मुंख़बा शेर ख़ुश अल्हानी से पढ़ कर सुनाए।

इस के बाद आदरणीय वओनी साहिब ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के अरबी क़सीदा

يَا عَيْنَ فَيْضِ اللّٰهِ وَالْعِرْفَانِ
يَسْعٰى اِلَيْكَ الْخَلْقُ كَالظَّمْآنِ

मैं से कुछ शेर अच्छी आवाज़ से प्रस्तुत किए।

तालीमी ऐवार्ड का बांटना

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने शैक्षिक क्षेत्र में नुमायां सफलता हासिल करने वाले और उच्च नाम पैदा करने वाले छात्रों को सनदात और मैडल प्रदान फ़रमाए। हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथों से निम्नलिखित ख़ुशनसीब छात्रों ने तालीमी ऐवार्ड हासिल किए।

मलिक जुनैद अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुल्क बशारत महमूद साहिब A Levels & Sciences

मुहम्मद हामिद साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद राफ़े क़ुरैशी साहिब Bachelor in Computer Sciences

अदील अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब Bachelor

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

ये ख़ुदा का रौब है जो उसने कुफ़्फ़ार के दिलों पर डाल दिया है।

अल्लाह उस का मददगार है जो अल्लाह का मददगार है और वह इस को अपमानित करने वाला है जिस ने उस का इनकार किया।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति बदरी अस्हाबे रसूल हज़रत उबैद बिन अबू उबैद अन्सारी औसी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन नोमान बिन बलदमा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमीर, हज़रत अमरो बिन हारिस, हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब, हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस, हज़रत सलमा बिन असलम, हज़रत उक़बा बिन उसमान, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सहल, हज़रत अतबा बिन रबीया रज़ी अल्लाह अन्हुम व रज़ू अन्हुम की सीरत मुबारका का दिलनशीन वर्णन।

हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी अल्लाह अन्हो की नवासी और हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ा-मिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मामी आदरणीया साहबज़ादी सबीहा बेगम साहबा पत्नी अदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा अनवर अहमद साहब की वफ़ात पर उनका ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जुमा के बाद नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

आदरणीय चौधरी अब्दुल शकूर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , आदरणीय मलक सालिह मुहम्मद साहिब मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद और आदरणीय मवीशीहे जुमा साहिब आफ़ तनज़ानिया की वफ़ात पर उनका ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जुमा के बाद नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अप्रैल 2019 . स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّينِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

आज जिन बदरी सहाबा का मैं ज़िक्र करूँगा उनमें पहला नाम है हज़रत उबैद रज़ि। उनका पूरा नाम हज़रत उबैद बिन अबू उबैद अन्सारी औसी रज़ि था। इब्न हिशाम के अनुसार आप क़बीला औस के ख़ानदान बनू उमय्या से सम्बन्ध रखते थे। हज़रत उबैद रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग बदर, जंग उहद और जंग ख़ंदक़ में शामिल हुए थे ।

(असदुल ग़ाबह: फ़ी मअरफतिस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 538-539 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

(अस्सीरतुलन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 465,अल्अनसारो वमन मअहुम,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2001 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जुज़-ए-3 पृष्ठ 243 वमिन् हुलफ़ाइ बनी ज़फ़र, उबैद बिन् अबी उबैद,दारा लाहिया-ए-अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान1996 ई)इस से ज़्यादा उनकी मज़ीद तफ़सील नहीं है।

दूसरे सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन नुअमान बिन बलदमह रज़ि है। हज़रत अब्दुल्लाह के दादा का नाम बलदमह या बलज़मह भी वर्णन किया जाता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन नुअमान रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू ख़ुनास से था।

(अस्सीरत अन्नबविय्या लेइब्ने हश्शाम पृष्ठ 471, , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)(अलासाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 4 पृष्ठ 213 ,अब्दुल्लाह बिन अन्नुअमान ,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2005 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन नुअमान रज़ि हज़रत अबू क़तादह रज़ि के चचेरे भाई थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन नुअमान रज़ि को जंग बदर और जंग उहद में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 293 तबक़अतुल बद्रिय्यीन मिनल अन्सार अब्दुल्लाह बिन अलन्नुअमान, दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 1996 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र करना है उनका नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमीर रज़ि। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमीर रज़ि का सम्बन्ध क़बीला बनू जिदारह से था। आप जंग बदर में सम्मिलित हुए थे। एक कथन के अनुसार आपके पिता का नाम अमुयर के बजाय उबैद भी वर्णन हुआ है। इसी तरह कुछ ने आप के दादा का नाम अदी वर्णन किया है जबकि कुछ ने हारिस: वर्णन किया है। इब्न हश्शाम ने आप का क़बीला बनू जिदारह वर्णन किया है जबकि इब्न इसहाक़ ने बनू हारिस: वर्णन किया है।(अस्सीरतुलन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 467, अल्अन्सार व मन मअहुम , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 277, अब्दुल्लाह बिन अमीर,दार अहया अत्तुरास अल्अरबी 1996 ई) (अलासाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्ने हिज्र अल्असक़लानी भाग 4,पृष्ठ 172, अब्दुल्लाह बिन अमीर,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई) दोनों ही तारीख़ लिखने वाले हैं ।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम हज़रत अमरो बिन हारिस रज़ि है। हज़रत अमरो रज़ि का सम्बन्ध क़बीला बनू हारिस से था। कुछ ने आप का नाम अमरो वर्णन किया है जबकि दीगर आप का नाम आमिर भी वर्णन करते हैं। आप की कुनिय्यत अबू नाफ़िअ थी। हज़रत अमरो रज़ि ने शुरू में ही मक्का में इस्लाम क़बूल कर लिया था। आप हिजरत हब्शा दूसरी में शामिल थे। आप को जंग बदर में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(अस्सीरतुलन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 463,बाब मन हज़र बदरा मिनल मुस्सलेमीन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारफ़तुल असाब ले अबी उम्र भाग 3 पृष्ठ 255,अमरो बिन हारिस, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

(असदुल ग़ाबह: फ़ी मअरफतिस्सहाब: ले इब्ने असीर भाग 4, पृष्ठ 197,अमरो बिन हारिस ,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब रज़ि। हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब क़बीला बनू माज़िन से थे। आप के पिता का नाम कअब बिन अमरो और आप की माता का नाम रुबअब पुत्री अब्दुल्लाह था। आप हज़रत अबू लैला मअज़नी रज़ि के भाई थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब रज़ि के एक बेटे का नाम हारिस था जो ज़ुग़ैबह पुत्री औस से पैदा हुए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब रज़ि जंग बदर में सम्मिलित हुए थे। आप को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर के दिन अम्वाल ग़नीमत पर निगरान निर्धारित फ़रमाया था। इस के इलावा अन्य अवसरों पर भी आप को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अम्वाल ख़ुमस पर निगरान बनने की सआदत नसीब हुई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब रज़ि जंग उहद, जंग ख़ंदक़ और इस के इलावा सारी अन्य जन्गों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब रज़ि की वफ़ात मदीन में हज़रत उसमान रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में 33 हिज्री में हुई और आप की नमाज़ जनाज़ा हज़रत उसमान रज़ि ने पढ़ाई। आप की कुनिय्यत अबू हारिस के इलावा अबू यहया भी वर्णन की जाती है।

(अस्सीरतुलन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 475, , दारुल कुतुब अलइल्मियता बेरूत 2001 ई) (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 268 अब्दुल्लाह बिन काब बिन अमरो दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 105 अब्दुल्लाह बिन कअब अलमाज़नी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2002 ई) (असदुल ग़ाबह: फ़ी मअरफतिस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 370 अब्दुल्लाह बिन काब बिन अमरो दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि। हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि क़बीला बनू नज्जार से थे। आप के दादा का नाम सीरत और तारीख़ की किताबों में अधिकतर ख़ालिद वर्णन हुआ है हां तबक़ात अलकुबरा में उनका नाम ख़ल्लदा लिखा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि के बेटे का नाम अबदुर्रहमान और बेटी का नाम उमेरा था। इन दोनों की माता का नाम सुआद पुत्री-ए-क़युसतहा। उनके इलावा आप की एक और बेटी भी थीं जिनका नाम उम्मे औन था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि जंग बदर और जंग उहद में सम्मिलित हुए । अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उमारह अन्सारी के अनुसार आप जंग उहद में शहीद हुए थे जब के दूसरे कथन के अनुसार आप जंग उहद में शहीद नहीं हुए बल्कि आप ज़िन्दा रहे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सारी जंगों में सम्मिलित हुए और आप ने हज़रत उसमान रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई।

(अस्सीरतुलन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 474, नसबुल अफरा , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग-ए-एलिसा लस पृष्ठ 258 अब्दुल्लाह बिन क़ैस दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

तारीख़ की विभिन्नि किताबों में कुछ जगह मतभेद हो जाता है इसलिए मैं वर्णन कर देता हूँ ।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि है। हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि क़बीला बनू हारिसा बिन हारिस से थे। आप के पिता का नाम असलम था। एक कथन के अनुसार आपके दादा का नाम हरीश था जबकि दूसरे कथन के अनुसार हरीस था। आप की कुनिय्यत अबू सअुद थी।

(अस्सीरतुलन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 464, मन बनी उबीद बिन कअब व हलफ़ाइहुम, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001)

(अल्इस्तेयाब फ़ी माअरफतिस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 198 सलमा बिन असलम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2002 ई)

हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि की माता का नाम सुआद पुत्री रअफ़िअत था। हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि जंग बदर, जंग उहद, जंग ख़ंदक़ और इस के इलावा अन्य सारी जंगों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए। आप ने जंग बदर में साइब बिन उबैद और नुअुमान बिन अमुरो को क़ैद किया था। हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि हज़रत उमर रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में जंग जसर में शहीद हुए थे जो दरिया फ़ुरात के किनारे लड़ी गई थी। इस जंग की तफ़सील, मैं पिछले ख़ुत्बों में वर्णन कर चुका हूँ। बहुत बड़ी जंग थी जो मुसलमानों और ईरानियों के बीच लड़ी गई थी और जसर पुल को कहते हैं। दरिया पर एक पुल बनाया गया था। इस से , जसर नाम है इस के माध्यम से फिर मुसलमान दूसरे इलाक़े में गए थे। और इस जंग में ईरानियों की तरफ़ से जंगी हाथी भी इस्तेमाल हुए थे। बहरहाल जंग में दोनों पक्षों का बहुत नुक़्सान हुआ। मुसलमानों का खासतौर पर बहुत नुक़्सान हुआ था। वफ़ात के समय रिवायतों के मतभेद के साथ कम से कम आप की उम्र 38 साल वर्णन की जाती है।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 236 सलमा बिन असलम दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई) (असदुल ग़ाबह: फ़ी मअरफतिस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 516 सलमा बिन असलम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई) (अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्ने हिज्र असक़लानी भाग 3 पृष्ठ 120 सलमा बिन असलम,दारुल फ़िक्र बेरूत 2001) (तारीख़ इब्न ख़ुलद वन अनुवाद वाली भाग 3 हिस्सा अव्वल पृष्ठ 271, दारुल इशाअत कराची 2003 ई)

अल्लामा नूरुद्दीन हलबी की मशहूर किताब सीरत हलबीह में जंग बदर के मौक़ा पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कारों के अन्तर्गत वर्णन है कि जंग बदर में हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि की तलवार टूट गई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको खजूर की छड़ी देते हुए फ़रमाया कि इस के साथ लड़ाई करो। हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि ने जैसे ही इस छड़ी को अपने हाथ में लिया तो वो एक बेहतरीन तलवार बन गई और वह बाद में हमेशा आप के पास रही।

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 245 ज़िक्र मुग़ाज़ी जंग बदर अलकुबरा , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

शरह जरक़ानी और दलाइले नबुव्वत में है कि बदर के रोज़ हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि की तलवार टूट गई तो ख़ाली हाथ रह गए और बग़ैर किसी हथियार के थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें एक छड़ी देते हुए फ़रमाया उस के साथ लड़ाई करो तो वो एक बेहतरीन तलवार बन गई जो जसर के दिन शहीद होने तक आप के पास रही।

(शरह अज़ज़रकानी अलल मवाहेबुल लदुनिया भाग 2 पृष्ठ 302 अध्याय जंग बदर अलकुबरा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

(दलायलुल नबुव्वत लिलबहीक़ी भाग 3 पृष्ठ 99 बाब मा ज़िक्र फ़ी अलमग़ाज़ी मिन दआहू दारुल कुतुब अलालमी बेरूत 1988 ई)

इब्न साद जंग ख़ंदक़ के ज़िक्र के अन्तर्गत लिखते हैं कि जंग ख़ंदक़ के अवसर पर मुहाजरीन का झंडा हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि के पास था और अन्सार का झंडा हज़रत साद बिन उबैयदह रज़ि के पास था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सलमा बिन असलमा को दो सौ आदमियों पर निगरान निर्धारित किया था। इन झंडों के नीचे जो विभिन्न पार्टीयां थीं उन पर निगरान निर्धारित किए गए थे तो हज़रत सलमह रज़ि को दो सौ आदमियों पर निगरान निर्धारित किया गया था और हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि को तीन सौ आदमियों पर निगरान निर्धारित किया गया था और उन की यह डयूटी निर्धारित फ़रमाई कि वह मदीना का पहरा देंगे और वह ऊंची आवाज़ में तकबीर पढ़ते रहेंगे। इस का कारण यह था कि बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ से जहां बच्चे इत्यादि हिफ़ाज़त के उद्देश्य से रखे गए थे इस जगह पर हमले का अंदेशा था।

(उयूनुल असर भाग 2 पृष्ठ 88 जंग ख़नदक़, दारुल क़लम बेरूत1993 ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल की एक साज़िश हुई थी और इस के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि

"जंग एहज़ाब की ज़िल्लत भरी नाकामी की याद ने क़ुरैश मक्का के तन-बदन में आग लगा रखी थी कुदरती तौर पर यह दिल की आग अधिकतर अबू सुफ़ियान के हिस्से में आई थी जो मक्का का रईस था और एहज़ाब की मुहिम में खासतौर पर ज़िल्लत की मार खा चुका था। कुछ समय तक अबू सुफ़ियान इस आग में अंदर ही अंदर जलता रहा मगर अन्त में मामला उस की बर्दाश्त से बाहर निकल गया और इस आग के छुपे हुए शोले बाहर आने शुरू हुए, उनका इज़हार होना शुरू हो गया। अपने आप कुफ़्फ़ार की सबसे ज़्यादा शत्रुता बल्कि हक़ीक़त में असल शत्रुता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती के साथ थी इसलिए अब अबूसुफ़ियान इस ख़्याल में पड़ गया कि जब ज़ाहिरी तदबीरों और कोशिशों से और जंगों का कोई नतीजा नहीं निकला तो क्यों किसी छुपी हुई कोशिश से, (किसी बहाने से, किसी तरीके से) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ात्मा ना कर दिया जाए, क्यों ऐसी तदबीर ना की जाए। वह यह जानता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्दगिर्द कोई ख़ास पहरा नहीं रहता बल्कि कई बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिलकुल असुरक्षा की हालत में इधर उधर आते-जाते थे। शहर के गलियों में फिरते थे। मस्जिद नबवी में रोज़ाना कम से कम पाँच वक़्त नमाज़ों के लिए तशरीफ़ लाते थे और सफ़रों में बिलकुल बिना तकल्लुफ और आज़ाद तौर पर रहते थे। इस से ज़्यादा अच्छा मौक़ा किसी किरायादार क़ातिल के लिए क्या हो सकता था? यह ख़्याल आना था कि अबूसुफ़ियान ने अंदर ही अंदर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल की सोच दृढ़ करनी शुरू कर दी। जब वह पूरी इच्छा के साथ इस इरादे पर जम गया तो उस ने एक दिन मौक़ा पाकर अपनी इच्छा के अनुसार कुछ क़ुरैशी नौजवानों से कहा कि क्या तुम में से कोई ऐसा जवान मर्द नहीं जो मदीना में जाकर ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का काम तमाम कर दे? तुम जानते हो कि मुहम्मद खुले तौर पर मदीना की गली कूचों में फिरता है। (जिस तरह भी उसने अपनी ज़बान में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कहा।) इन नौजवानों ने इस ख़्याल को सुना और ले उड़े। (उनके दिल में ये बात बस गई।) यह बात निकले अभी ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे कि एक देहाती नौजवान अबूसुफ़ियान के पास आया और कहने लगा कि मैंने आपका परामर्श सुना है। किसी नौजवान ने बता दी और मैं उस के लिए हाज़िर हूँ। मैं एक मज़बूत दिल वाला और बहादुर इन्सान हूँ जिसकी गिरिफ़्त सख़्त और हमला फ़ौरी होता है। अगर आप मुझे इस काम के लिए निर्धारित करके मेरी

मदद करें तो मैं मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को क़त्ल करने के उद्देश्य से जाने के लिए तैयार हूँ और मेरे पास एक ऐसा ख़ंजर है जो शिकारी गिध के छुपे हुए परों की तरह रहेगा अर्थात बहुत छुपा हुआ है, छुपा के ऐसी हालत में रखूँगा। अत: मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला करूँगा और फिर भाग कर किसी क़ाफ़िले में मिल जाऊँगा और मुसलमान मुझे पकड़ नहीं सकेंगे और मैं मदीना के रास्ते का भी ख़ूब माहिर हूँ। अबूसुफ़ियान बड़ा ख़ुश हुआ उसने कहा कि बस-बस तुम हमारे काम के आदमी हो। इस के बाद अबूसुफ़ियान ने उसे एक तेज़ चलने वाली ऊंटनी और सफ़र का सामान दिया , ख़र्च दिया और विदाव किया और ताकीद की कि इस राज़ को किसी पर ज़ाहिर ना होने देना।

मक्का से विदा हो कर यह ादमी दिन को छुपता हुआ और रात को सफ़र करता हुआ मदीना की तरफ़ रवाना हुआ। छुट्टे दिन मदीना पहुंच गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पता लेते हुए सीधा क़बीला बनी अब्दुल अशहल की मस्जिद में पहुंचा जहां आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त तशरीफ़ ले गए हुए थे। चूँकि इन दिनों में नए से नए आदमी मदीना में आते रहते थे इसलिए किसी मुसलमान को इस के बारे में शक नहीं हुआ कि किस नीयत से आया है। मगर जैसे ही यह मस्जिद में दाख़िल हुआ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे अपनी तरफ़ आते देखा तो आप ने फ़रमाया यह आदमी किसी बुरी नीयत से आया है। ऊंची आवाज़ में आप ने फ़रमाया। उस तक यह शब्द पहुंच गए, वो ये अलफ़ाज़ सुनकर और भी तेज़ी के साथ आप की तरफ़ बढ़ा मगर एक अन्सारी रईस उसैद बिन हुज़ैर फ़ौरन लपक कर उस के साथ लिपट गए और इस कोशिश में उनका हाथ उस के छिपे हुए ख़ंजर पर भी जा पड़ा। फिर वह घबरा कर बोला कि मेरा ख़ून मेरा ख़ून। यानी तूने मुझे ज़ख़्मी कर दिया। जब उसे पराजित कर लिया गया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से पूछा कि सच सच बताओ कि तुम कौन हो और किस इरादे से आए हो? उसने कहा कि मेरी जान बख़्शी की जाए तो मैं बता दूँगा। आप ने फ़रमाया कि हाँ अगर तुम सारी बात सच सच बता दो तो फिर तुम्हें माफ़ कर दिया जाएगा। जिस पर उसने पूरा का पूरा सारा क़िस्सा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ कर दिया और यह भी बताया कि अबूसुफ़ियान ने इस से इस क़दर इनाम का वादा किया था। इस के बाद यह आदमी कुछ दिन तक मदीना में ठहरा और फिर अपनी ख़ुशी से,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातें सुन के, मुसलमानों के साथ रह कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों में दाख़िल हो गया। इस्लाम ले आया।

अबूसुफ़ियान की इस ख़ूनी साज़िश ने इस बात को आगे से भी ज़्यादा ज़रूरी कर दिया कि मक्का वालों के इरादे और निय्यत से आगाही रखी जाए। ताकि पता लगे कि उनकी क्या निय्यत है कि इस तरह की ख़ुफ़ीया साज़िशें भी कर रहे हैं। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वजह से अपने दो सहाबी अमरो बिन उमय्य ज़मुरी रज़ि और सलमा बिन असलम रज़ि , जिनका ज़िक्र हो रहा है, इन को मक्का की तरफ़ रवाना फ़रमाया और अबूसुफ़ियान की इस कत्ल की साज़िश और इस की पिछली ख़ून करने वाले कामों को देखते हुए उन्हें यह भी इजाज़त दे दी कि अगर मौक़ा पाएं तो बेशक इस्लाम के इस जंगी दुश्मन का ख़ात्मा कर दें। मगर जब उमय्या और उन का साथी मक्का में पहुंचे तो क़ुरैश होशियार हो गए और या दो सहाबी अपनी जान बचा कर मदीना की तरफ़ वापस लौट आए। रास्ते में उन्हें क़ुरैश के दो जासूस मिल गए जिन्हें क़ुरैश के रईसों ने मुसलमानों की हरकतों का पता लेने और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हालात का ज्ञान हासिल करने के लिए भेजा था। अब यह भी कोई आश्चर्य नहीं कि यह कोशिश भी क़ुरैश की किसी और ख़ूनी साज़िश का आरम्भ हो, जैसे पहले एक आदमी को भेजा था। उनको भी भेजा हो कि साज़िश कर के नऊज़ बिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़त्ल करें मगर ख़ुदा का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि उमयय्या और सलमा बिन असलम को उन की जासूसी का पता चल गया जिस पर उन्होंने इन जासूसों पर हमला करके उन्हें क़ैद कर लेना चाहा मगर उन्होंने सामने से मुक़ाबला किया। अत: इस लड़ाई में एक जासूस तो मारा गया और दूसरे को क़ैद करके वह अपने साथ मदीना में वापस ले आए।

इस सरिया(जंग) की तारीख़ के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है। इब्न हश्शाम और तिबरी उसे 4 हिज्री में वर्णन करते हैं परन्तु इब्ने साद ने उसे 6 हिज्री में लिखा है । अल्लामा क़ुसतलानी और ज़ुरक़ानी ने इब्न-ए-साद की रिवायत को प्राथमिकता दी है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि इन सारों की (तहक़ीक़ की)समीक्षा करते हुए लिखते हैं कि अत: मैंने भी उसे 6 हिज्री में वर्णन किया है। अल्लाह बेहतर जानता है। इब्न-ए-साद की रिवायत के मफ़हूम का समर्थन बीहक़ी ने भी किया है मगर इस में इस घटना के ज़माना का पता नहीं चलता।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 741 से 743)

सुलह हुदैबिया के अवसर पर हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि का ज़िक्र यूं मिलता है कि हज़रत उम्मे अमारा वर्णन करती हैं कि मैं सुलह हुदैबिया के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देख रही थी जब कि आप बैठे हुए थे और हज़रत अबाद बिन बिशर रज़ि और हज़रत सलमा बिन असलम रज़ि दोनों जंगी कवच पहने हुए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास खड़े पहरा दे रहे थे। जब क़ुरैश के राजदूत सुहैल बिन अमरो ने अपनी आवाज़ को बुलंद किया तो इन दोनों ने उसे कहा कि अपनी आवाज़ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने धीमा रखो, धीरे रखो, हल्की रखो।(किताबुल मग़ाज़ी भाग 2 पृष्ठ 93 बाब जंग अलहुदैबिया, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2004 ई)यह उनकी एक ख़ास ख़िदमत का ज़िक्र है जो इस अवसर पर वर्णन हुई।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम हज़रत उक़्बह बिन असमान रज़ि है। हज़रत उक़्बह बिन उसमान रज़ि की माता का नाम उम्मे जमील पुत्री क़ुतबह था ।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 300 आमिर् बिन् ज़ुरैक़ ...दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

हज़रत उक़्बह रज़ि अन्सार के क़बीला बनू ज़ुरैक़ में से थे। हज़रत उक़बह रज़ि और आप के भाई हज़रत साद बिन उसमान रज़ि को जंग बदर और जंग उहद में शामिल होने का सौभाग्य नसीब हुआ था। तारीख़ की विभिन्न किताबों में यह वर्णन किया जाता है कि जंग उहद के अवसर पर जो कुछ लोग हमले की शिद्दत से वक़्ती तौर पर भाग उठे थे उनमें से दो आदमी हज़रत उक़बा बिन उसमान रज़ि और हज़रत साद बिन उसमान रज़ि भी थे। यहां तक कि वे अअ्वस् के सामने के एक पहाड़ जल्अब् पर पहुंच गए और तीन दिन तक तक वहां क़ियाम किया। अअ्वस मदीना से कुछ मील की दूरी पर एक स्थान है। फिर जब वे दोनों वापस रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने इस बात का ज़िक्र किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। لَقَدْ ذَهَبْتُمْ فِيْهَا عَرِيْضَةً अर्थात तुम उस तरफ़ चल दिए जिस में कुशादगी थी।

(असदुल ग़ाबह: फ़ी मअरफतिस्सहाब: भाग-ए-अलराबा पृष्ठ 54-55 उक़्बह् बिन् उस्मअन् दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

(जामेउल बियान फी तावीलुल कुर्आन, मारूफ़ तफ़सीर तिबरी भाग 4 पृष्ठ 183-184, सूरत आले इमरान आयत 156 प्रकाशन दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 2001 ई)(मुअजमुल बुलदान भाग 1 पृष्ठ 180 ज़ेर लफ़्ज़ औस)

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको कुछ नहीं कहा और उनकी ग़लती को माफ फ़रमाया। कोई पूछताछ नहीं की।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन सहल रज़ि। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सहल रज़ि का सम्बन्ध क़बीला बनी ज़अऊरा से था जो कि बनू अब्दे अशहल के हलीफ़ थे और ये भी कहा जाता है कि आप ग़स्सानी थे। हज़रत अब्दुल्लाह के दादा का नाम कुछ ने ज़ैद और कुछ ने राफ़े भी वर्णन किया है। हज़रत अब्दुल्लाह की माता का नाम सअ्बह पुत्री तय्यिहानतहा जो हज़रत अबू-लहैसम बिन तय्यिहअना की बहन थीं । आप हज़रत राफ़े बिन सहल रज़ि के भाई थे। हज़रत अब्दुल्लाह जंग बदर में सम्मिलित हुए। आप के भाई हज़रत राफ़े रज़ि आप के साथ जंग उहद और ख़ंदक़ में सम्मिलित हुए। हज़रत अब्दुल्लाह जंग ख़ंदक़ में शहीद हुए। बनू उवैफ़ के एक आदमी ने आप को तीर मार कर शहीद किया था।

(अस्सीरतुलन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 464, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 236, अब्दुल्लाह बिन सहल,दार अहया अत्तुरास अल्अरबी 1996 ई) (असदुल ग़ाबह: फ़ी मअरफतिस्सहाब: ले इब्ने असीर भाग 3, पृष्ठ 269 अब्दुल्लाह बिन सहल, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

मुग़ैरह बिन हकीम वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह से पूछा कि क्या आप जंग बदर में सम्मिलित थे? आप ने जवाब दिया कि हाँ और मैं बैअत उक़्बा में भी शामिल था।

(मजमउज़्ज़वाइद वमनबउल फवाइद ल अलाबिन अबी बक्र भाग 6 पृष्ठ 108, किताबुल मग़ाज़ी वस्सैर बाब क़द हज़र बदरा जमाअत,हदीस10044,दारुल कुतुब

अल्इलमिया बेरूत2001 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह के जंग हमराउल असद ,जो मदीना से आठ मील की दूरी पर एक मुक़ाम है,(मुअज्जमुल बलदान भाग 2 पृष्ठ 181 ज़ेर लफ़्ज़ हमराउस असद) इस में शामिल होने का ज़िक्र भी सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किताब सुबुलुलहुदा में यूं मिलता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सहल रज़ि और हज़रत राफ़े बिन सहल रज़ि दोनों भाई जो क़बीला बनू अब्दे अशहल में से थे जब वे दोनों जंग उहद से वापस आए तो वे बहुत ज़ख़्मी थे। जंग में ज़ख़्मी हो गए और हज़रत अब्दुल्लाह ज़्यादा ज़ख़्मी थे। जब इन दोनों भाईयों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराउल असद की तरफ़ जाने और इस में शामिल होने के बारे में आप के हुक्म के बारे में सुना तो उन में से एक ने दूसरे से कहा। अल्लाह की कसम अगर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग में शरीक न हो सके तो ये एक बहुत बड़ी महरूमी होगी। ज़ख़्मी हालत में थे लेकिन इस के बावजूद भी एक जज़्बा था। ईमान में दृढ़ता थी । फिर कहने लगे अल्लाह की कसम हमारे पास कोई सवारी भी नहीं है जिस पर हम सवार हूँ और ना ही हम जानते हैं कि हम किस तरह ये काम करें। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कि आओ मेरे साथ हम पैदल चलते हैं । हज़रत राफ़े ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझे तो ज़ख़्मों की वजह से चलने की ताकत भी नहीं है। आप के भाई ने कहा कि आओ हम धीरे धीरे चलते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ जाते हैं। अत: वे दोनों गिरते पड़ते चलने लगे। हज़रत राफ़ रज़ि ने कभी कमज़ोरी महसूस की तो हज़रत अब्दुल्लाह ने हज़रत राफ़े रज़ि को अपनी पीठ पर उठा लिया। कभी वे पैदल चलने लगे। ऐसी हालत थी कि दोनों ही ज़ख़्मी थे लेकिन जो बेहतर थे वह ज़्यादा ज़ख़्मी को अपनी पीठ पर उठा लेते थे लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ चलते रहे। कमज़ोरी की वजह से कई बार ऐसी हालत होती थी कि वे हरकत भी नहीं कर सकते थे। यहां तक कि इशा के वक़्त वे दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। सहाबा कराम रज़ि उस वक़्त आग जला रहे थे। एक डेरा डाल लिया था। रात का वक़्त था तो आप दोनों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया। इस रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पहरे पर हज़रत अब्बाद बिन बिशर रज़ि थे। जब ये पहुंचे वहां तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे, दोनों से पूछा कि किस चीज़ ने तुम्हें रोके रखा तो इन दोनों ने इस का कारण बताया कि क्या वजह हो गई। इस पर आप ने इन दोनों को दुआ ख़ैर देते हुए फ़रमाया अगर तुम दोनों को लंबी उम्र नसीब हुई तो तुम देखोगे कि तुम लोगों को घोड़े और ख़च्चर और ऊंट बतौर सवारियों के नसीब होंगे। अभी तो तुम गिरते पड़ते पैदल आए हो लेकिन लंबी ज़िन्दगी पाओगे तो ये देखोगे कि ये सब सवारियां तुम्हें मिल जाऐंगी लेकिन साथ ये भी फ़रमाया कि लेकिन वे तुम्हारे लिए तुम दोनों के इस सफ़र से बेहतर नहीं होंगी जो तुमने पैदल गिरते पड़ते किया है।(सुबुलुल हुदा वर्रशिाद सीर ख़ैरुल ईबाद ले मुहम्मद बिन यूसुफ़, भाग 4 पृष्ठ 310,बाब अलराबे अशर फ़ी जंग हमराउल असद, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत1993 ई) जो इस का सवाब है और जो इस का बदला मिलेगा और जो उस की बरकते हैं वे बहुत ज़्यादा हैं ।

जंग हमराउल असद की तफ़सील कि यह क्या था जिसके लिए ये लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे गए थे उस के बारे में कुछ तफ़सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखी है। नबी करीम और आप के सहाबा रज़ि की जंग उहद से वापसी और जंग हमराउल असद की तफ़सील इस तरह है कि उहद की जंग के बाद मदीना में जो रात थी एक सख़्त ख़ौफ़ की रात थी क्योंकि बावजूद उस के कि बज़ाहिर लश्कर कुरैश ने मक्का की राह ले ली थी यह भय था कि ये काम मुसलमानों को ग़ाफ़िल करने की नीयत से ना हो। ज़ाहिर में तो उहद की जंग में वे जीते हुए थे और मक्का वापस लौट रहे थे लेकिन मुसलमानों को ये फ़िक्र थी कि कहीं यह ना हो कि ये भी कोई चाल हो और मदीना पर हमला करने के लिए फिर वापस लौट आएं और अचानक लौट कर मदीना पर हमला कर दें। अत: उस रात को मदीना में इसी सावधानी की कारण से, शक की वजह से पहरे का प्रबन्ध किया गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान का ख़ुसूसीयत से सारी रात सहाबा ने पहरा दिया।

सुबह हुई तो पता लगा कि यह विचार केवल ख़्याली नहीं था क्योंकि फ़ज्र की नमाज़ से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह सूचना पहुंची कि क़ुरैश का लश्कर मदीना से कुछ मील की दूरी पर ठहर गया है और क़ुरैश के रईसों में यह सरगर्म बेहस जारी है कि इस फ़त्ह से लाभ उठाते हुए क्यों ना मदीना पर हमला कर दिया जाए और कुछ क़ुरैश एक दूसरे को ताना दे रहे थे कि ना तो तुम ने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)को क़त्ल किया और न मुसलमान औरतों को लौंडियां बनाया और न उनके माल पर क़ाबज़ा किया बल्कि जब तुम उन पर ग़ालिब आए और तुम्हें ये मौक़ा मिला कि तुम उनको ध्वस्त कर देते तो तुम उन्हें यूं ही छोड़ कर वापस चले आए हो ताकि वे फिर ज़ोर पकड़ जाएं। अत: अब भी मौक़ा है कि वापस चलो और मदीना पर हमला करके मुसलमानों की जड़ काट दो। इस के मुक़ाबला पर कुछ दूसरे ये भी कहते थे कि तुम्हें एक फ़तह हासिल हुई है। उसे ग़नीमत समझो और मक्का वापस लौट चलो। ऐसा ना हो कि ये शोहरत भी खो बैठो जो तुम्हें हासिल हुई है और ये फ़तह जो है वे शिकस्त की सूरत में बदल जाए क्योंकि अब अगर तुम लोग वापस लौटे और मदीना पर हमला किया तो यक़ीनन मुसलमान जान तोड़ कर लड़ेंगे और जो लोग उहद में शामिल नहीं हुए थे वे भी मैदान में निकल आएँगे। मगर आख़िर में जोशीले लोगों की राय ग़ालिब आई और क़ुरैश मदीना की तरफ़ वापस लौटने के लिए तैयार हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इन घटनाओं की सूचना हुई तो आप ने फ़ौरन ऐलान फ़रमाया कि मुसलमान तैयार हो जाएं मगर साथ ही यह भी हुक्म दिया कि सिवाए उन लोगों के जो उहद में सम्मिलित हुए थे और कोई आदमी हमारे साथ ना निकले। अत: उहद के मुजाहिदीन जिन में से अक्सर ज़ख़्मी थे (और दो ज़ख़्मियों का ज़िक्र तो मैंने कर ही दिया) अपने ज़ख़्मों को बांध कर अपने आक़ा के साथ चल दिए और लिखा है कि इस अवसर पर मुसलमान ऐसी ख़ुशी और जोश के साथ निकले कि जैसे कोई फ़ातिह लश्कर फ़तह के बाद दुश्मन के पीछा में निकलता है। आठ मील का फ़ासिला तय करके आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमराउल असद में पहुंचे जहां दो मुसलमानों की लाशें, लाशें उनको मैदान में पड़ी हुई मिली थीं। पूछताछ पर मालूम हुआ कि ये वे जासूस थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के पीछे रवाना किए थे मगर जिन्हें क़ुरैश ने मौक़ा पा कर क़त्ल कर दिया था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन शहीदों को एक क़ब्र खुदवा कर इस में इकट्ठा दफ़न करवा दिया और अब चूँकि शाम हो चुकी थी आप ने वहीं डेरा डालने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि मैदान में विभिन्न स्थानों पर आग रोशन कर दी जाए। खुली जगह पर आगीं जला दी जाएं । अत: देखते ही देखते हमरउल असद के मैदान में पाँच सौ आगीं जल गईं जो हर दूर से देखने वाले के दिल को मरऊब करती थीं। बड़ा रोब पड़ने लग गया। विभिन्न लोग समझें कि यह आबादी है और बड़े बड़े विभिन्न कैंप बने हुए हैं। शायद इसी मौक़ा पर क़बीला ख़ुज़ाह का एक मुशरिक रईस मअबद नामक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और आप से उहद के कत्ल होने वालों के बारे में हमदर्दी की और फिर अपने रास्ते पर रवाना हो गया। दूसरे दिन जब वह मुक़ाम रौहअ (यह भी एक स्थान है, जगह है जो मदीना से चालीस मील के दूरी पर है। वहां) पहुंचा तो क्या देखता है कि क़ुरैश का लश्कर वहां डेरा डाले पड़ा है (जो बेहस कर के वापस मदीना में आ रहे थे) और मदीना की तरफ़ वापस चलने की तैयारियां हो रही हैं। मअबद शीघ्र अबूसुफ़ियान के पास गया और उसे जाकर कहने लगा कि तुम क्या करने लगे अल्लाह की क़सम! मैंने तो अभी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लश्कर को हमरउल असद में छोड़ा है। मैं उन्हें वहां छोड़कर आया हूँ और ऐसा रोब वाला लश्कर है जो मैंने कभी नहीं देखा। और उहद की हज़ीमत की नदामत, (जो जंग हारी है इस की नदामत) में उनको इतना जोश है कि तुम्हें देखते ही वे भस्म कर देंगे, खा जाऐंगे, ख़त्म कर देंगे। अबूसुफ़ियान और इस के साथीयों पर माबद की इन बातों से असर पड़ा कि वे मदीना की तरफ़ लौटने का इरादा तर्क करके फ़ौरन मक्का की तरफ़ रवाना हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुरैश के लश्कर के इस तरह भाग निकलने की सूचना प्राप्त हुई तो आप ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फ़रमाया कि यह ख़ुदा का रोब है जो उसने कुफ़्फ़ार के दिलों पर छा दिया है। इस के बाद आप ने हमरउल असद में दो तीन दिन और निवास फ़रमाया और फिर पाँच दिन की ग़ैर

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

हाज़िरी के बाद मदीना में वापस तशरीफ़ ले आए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन पृष्ठ 504-505)(लुग़ातुल हदीस भाग 2 पृष्ठ 149 ज़ेर लफ़्ज़ रोहा)

अगला ज़िक्र जिन सहाबी का है उनका नाम हज़रत उत़बह बिन रबीअह रज़ि है। हज़रत अतबह रज़ि का सम्बन्ध किस क़बीले से था उस के बारे में इतिहासकारों में मतभेद पाया जाता है। इब्ने इसहाक़ वर्णन करते हैं कि हज़रत उत़बह बिन रबीअह रज़ि क़बीला बनू लू ज़ान के हलीफ़ थे और उनका सम्बन्ध क़बीला बहरा से था। कुछ के नज़दीक आप क़बीला औस के हलीफ़ थे। बहरहाल आप को जंग बदर और जंग उहद में शामिल होने का सौभाग्य मिला। अल्लामा इब्न हिज्र असक़लानी वर्णन करते हैं कि जंग यरमौक में शामिल होने वाले उमरा में से एक का नाम उतबा बिन रबीया मिलता है। वह कहते हैं कि मेरे नज़दीक यही वह सहाबी हैं।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 469 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2001 ई) (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 284 उत़बऩा बिन रबी़अह बिन ख़ालिद़ दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई) (अलासाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 4 पृष्ठ 360 उत़ब बिन रबी़अ बिन ख़ालिद़,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

जंग यरमौक की तफ़सील कुछ इस तरह है कि 12 हिज्री में हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जब हज की अदायगी से वापस मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ने 13 हिज्री के आरम्भ में मुसलमानों की फ़ौजों को मुल्क सीरिया की तरफ़ रवाना किया। अत: हज़रत अमरो बिन आस रज़ि को फ़िलस्तीन की तरफ़, यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान, हज़रत अबू उबैदह बिन अलजर्रह रज़ि और हज़रत शुरह़बी़ल बिन हसनह रज़ि को आदेश दिया कि सीरिया के ऊंचे इलाक़े बलक़ा पर से होते हुए तबूक्या चले जाएं। हज़रत अबोबकर रज़ि ने पहले ख़ालिद बिन सईद रज़ि को अमीर निर्धारित किया फिर बाद में उनकी जगह यज़ीद बिन सुफ़ियान को अमीर बना लिया। ये लोग सात हज़ार मुजाहिदीन के साथ मुल्क शाम की तरफ़ रवाना हुए। इस्लामी लश्कर के अमीर अपनी फ़ौजों को लेकर शाम पहुंचे। हिरक़्ल ख़ुद चल कर हम्स आया और रोमियों का बहुत बड़ा लश्कर तैयार किया। उसने मुसलमान उमीरों के मुक़ाबले के लिए अलग अलग अमीर निर्धारित किए। दुश्मन की तैयारी देखकर मुसलमानों पर और कुछ उनमें से इतने ईमान वाले भी नहीं थे, भय छा गया क्योंकि मुसलमानों की संख्या उस समय सत्ताईस हज़ार थी। इस अवस्था में हज़रत अमरो बिन आस रज़ि ने हिदायत दी कि तुम सब एक जगह जमा हो जाओ क्योंकि जमा होने की सूरत में तुम्हें कम संख्या होने के कारण पराजित करना आसान नहीं होगा। थोड़े हो इस लश्कर के मुक़ाबला पर लेकिन अगर इकट्ठे हो जाओगे तो आसानी से तुम्हारे पर फ़तह नहीं पाई जाएगी। अगर अलग अलग रहे हर लीडर के अंदर तो याद रखो तुम में से एक भी ऐसा बाक़ी नहीं रहेगा जो किसी आगे वाले के काम आ सके क्योंकि हम में से हर एक पर बड़ी बड़ी फ़ौजें मुसल्लत कर दी गई हैं। अत: तय यह हुआ कि यरमौक के स्थान पर सब मुसलमान फ़ौजें इकट्ठी हो जाएं। यही मश्वरा हज़रत अबोबकर रज़ि ने भी मुसलमानों को भिजवाया और फ़रमाया कि जमा हो कर एक लश्कर बन जाओ और अपनी फ़ौजों को मुशरिकीन की फ़ौजों से भिड़ा दो। तुम अल्लाह के मददगार हो अल्लाह उस का मददगार है जो अल्लाह का मददगार है और वह उस को रुस्वा करने वाला है जिसने उस का इनकार किया। तुम जैसे लोग कम संख्या की वजह से कभी पराजित नहीं हो सकते। हज़रत अबू बकर रज़ि ने पैग़ाम भिजवाया कि बेशक तुम थोड़े हो लेकिन अगर ईमान है और इकट्ठे हो कर लड़ोगे तो कभी पराजित नहीं हो सकते क्योंकि तुम ख़ुदा तआला के लिए लड़ रहे हो। फ़रमाया कि दस हज़ार बल्कि इस से भी कहीं ज़्यादा अगर गुनाहों के तरफ़दार बन कर उट्ठेंगे तो वे दस हज़ार से ज़रूर पराजित हो जाऐंगे। संख्या की फ़िक्र ना करो क्योंकि अगर तुम दस हज़ार हो या इस से भी ज़्यादा हो लेकिन अगर वे गुनाह करने वाले हैं और ग़लत काम करने वाले हैं तो फिर ज़रूर पराजित होंगे अत: तुम गुनाहों से बचो। अपने आपको पाक भी करो और एक हो जाओ। इकाई पैदा करो और यरमूक में मिलकर काम करने के लिए जमा हो जाओ। तुम में से हर एक अमीर अपनी फ़ौज के साथ नमाज़ अदा करे। सफ़र 13 हिज्री से लेकर रबी उस्सानी तक मुसलमानों ने रूमी लश्कर का घेराव किया मगर फिर बी मुसलमानों को इस दौरान सफलता नहीं मिली। इस दौरान हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि को बतौर सहायता के इराक़ से यरमौक पहुंचने का हुक्म दिया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि उस वक़्त इराक़ के गवर्नर थे। हज़रत ख़ालिद रज़ि के पहुंचने से पहले सारे अमीर अलग अलग अपनी फ़ौज को लेकर लड़ रहे थे परन्तु हज़रत ख़ालिद रज़ि ने वहां पहुंच कर सारे मुसलमानों को एक अमीर निर्धारित करने की नसीहत की जिस पर सब ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि को अमीर निर्धारित कर लिया। रोमियों के लश्कर की संख्या दो लाख या दो लाख चालीस हज़ार के क़रीब वर्णन की जाती है और इस के मुक़ाबला पर मुसलमानों के लश्कर की संख्या सैंतीस हज़ार से लेकर छयालीस हज़ार तक वर्णन की जाती है, लगभग पांचवां हिस्सा थी। रौमी लश्कर की ताक़त की यह अवस्था थी कि अस्सी हज़ार के पांव में बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं और चालीस हज़ार आदमी ज़ंजीरों में बंधे हुए थे ताकि जान देने के सिवा भागने का उनको ख़्याल भी ना आए। एक लाख बीस हज़ार आदमी ऐसा था जिन को इसलिए बाँधा गया था कि सिर्फ उन्होंने लड़ना है और मरना है इस के इलावा कुछ नहीं और चालीस हज़ार आदमियों ने ख़ुद को अपनी पगड़ियों के साथ बाँधा हुआ था और अस्सी हज़ार सवार और अस्सी हज़ार पैदल थे। बेशुमार पादरी लश्कर को जोश दिलाने के लिए रूमी लश्कर के साथ थे। इसी जंग के दौरान हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जमादील ऊला मैं बीमार हुए और जमादलि आख़िर में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

हज़रत ख़ालिद रज़ि ने इस जंग में मुसलमानों के लश्कर को बहुत सारे दस्तों में बांट दिया जिनकी गिनती छत्तीस से लेकर चालीस तक वर्णन की जाती है लेकिन एक ही अमीर के तहत लड़ रहे थे। इन दस्तों में से एक दस्ते के निगरान हज़रत अतबा बिन रबीअह रज़ि थे। हज़रत ख़ालिद रज़ि ने कहा कि दुश्मन की संख्या बहुत ज़्यादा है लेकिन हमारी इस तर्तीब की वजह से मुसलमानों का लश्कर दुश्मन को बज़ाहिर ज़्यादा नज़र आएगा। इस्लामी लश्कर के महत्व का अंदाज़ा इस से हो सकता है कि लगभग एक हज़ार ऐसे बुज़ुर्ग इस लश्कर में थे जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा मुबारक देखा हुआ था। अत: ऐसे सहाबा रज़ि थे जो जंग बदर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम के साथ सम्मिलित हो चुके थे। दोनों पक्षों में बड़ी भयानक जंग का आरम्भ हुआ। इसी दौरान मदीना से एक क़ासिद ख़बर लेकर आया कोई ख़बर लेकर आया। सवारों ने उसे रोका तो उसने बताया कि सब ख़ैरीयत है मगर असल घटना यह थी कि वह हज़रत अबू बकर रज़ि की वफ़ात की ख़बर लाया था। लोगों ने क़ासिद को हज़रत ख़ालिद रज़ि के पास पहुंचाया और उस ने चुपके से हज़रत अबू बकर रज़ि की वफ़ात की ख़बर दी और फ़ौज के लोगों से जो कुछ कहा वह भी बता दिया कि मैंने उनको कुछ नहीं बताया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने इस से ख़त लेकर अपने तरकश में तीर रखने की जगह में डाल लिया,क्योंकि उन्हें अंदेशा था कि अगर ये ख़बर लश्कर को मालूम हो गई तो फिर अबतरी फैलने का भय है। मुसलमान शायद इस तरह ना लड़ें। बहरहाल मुसलमान साबित क़दम रहे और शाम तक ख़ूब लड़ाई हुई फिर भी रौमी लश्कर ने फिर भागना शुरू कर दिया। इस जंग में एक लाख से अधिक रूमी फ़ौजी हलाक हुए

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

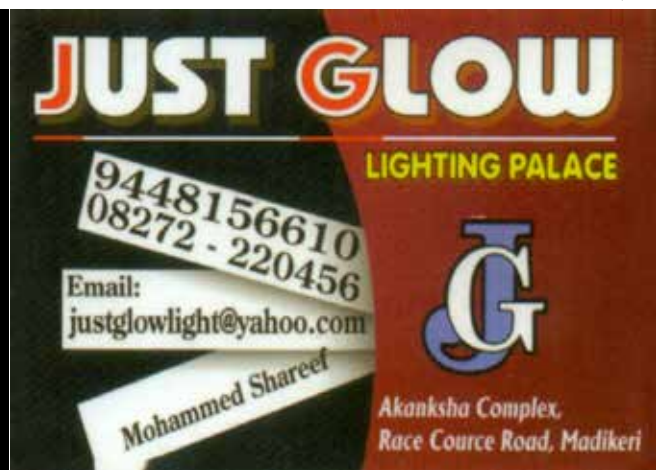

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

और कुल तीन हज़ार मुसलमान इस जंग में शहीद हुए। इन शुहदा में हज़रत इक्रिमा बिन अबुजहल रज़ि भी थे। क़ैसर को जब इस हार की ख़बर मिली तो वह उस वक़्त हुम्मस में मुक़ीम था वह फ़ौरन वहां से निकल के भाग गया।

फ़तह यरमौक के बाद इस्लामी फ़ौजें पूरे मुल्क सीरिया में फैल गईं और किन्नसरीन , अनताकीया,जूमह, सरमीन, तीज़ीन, क़ूरुस, तल्ले अज़ाज़, दुलूक, रअबान इत्यादि स्थानों पर बहुत आसानी से फ़तह हासिल की।

(उद्धरित तारीख़ अत्तिबरी भाग 4 पृष्ठ 53 से 63 दारुल फ़िकर बेरूत 2002 ई)

(ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ी अल्लाह अन्हुम, शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी, पृष्ठ 126, मकतबा रहमानीया लाहौर)(अलकामिल फ़ित्तारीख़ जिल्द 2 पृष्ठ 326 सन 15 प्रकाशन दारुल किताब अल्अरबी बेरूत 2012 ई)

आज जिन सहाबा रज़ि का ज़िक्र था वे यही है। अगले ज़िक्र अब शायद फिर रमज़ान के बाद ही होंगे। इंशा अल्लाह अब रमज़ान भी अगले हफ़्ते से शुरू होने वाला है।

अब एक ज़िक्र मैं करना चाहता हूँ। एक जनाज़ा नमाज़ जुमा के बाद पढ़ाऊंगा जो आदरणीया साहिबज़ादी सबीहा बेगम साहिबा का है जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि की नवासी थीं। आप की सबसे बड़ी बेटी की बड़ी बेटी थीं और हज़रत मिर्ज़ा रशीद अहमद साहिब की बेटी थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पोते ,हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत उम्मे नासिर रज़ी अल्लाह तआला अन्हा के बेटे साहिबज़ादा मिर्ज़ा अनवर अहमद साहिब की पत्नी थीं। 30 अप्रैल को 90 साल की उम्र में , ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट में इन की वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

और इस रिश्ते से वे मेरी मामी भी थीं। हज़रत मिर्ज़ा रशीद अहमद साहिब हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब के बेटे थे और जैसा कि मैंने बताया कि हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि की सबसे बड़ी बेटी अमतुस्सलाम बेगम साहिबा की यह बेटी थीं। हज़रत अम्माँ-जान रज़ी अल्लाह तआला अन्हा ने रब्वह में अपने ख़ानदान की जिस आख़िरी शादी में शमूलीयत फ़रमाई वह उनकी शादी थी। आप हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह तआला की बेगम हज़रत सय्यदा आसिफ़ा बेगम साहिबा की बड़ी बहन थीं। उनके बाक़ी एक बहन और तीन भाई हैं।

आपकी बहन अनीसा फौज़िया साहिबा लिखती हैं कि अपने माता पिता की सबसे बड़ी बेटी थीं। इसलिए अक्सर फ़ैसलों में माता पिता उनकी राय को बड़ी एहमीयत देते थे क्योंकि बड़ी समझदार भी थीं। इन पर बड़ा भरोसा करते थे और यह भी अपने माता पिता के भरोसा पर हमेशा पूरा उतरीं और अपने छोटे बहन भाइयों की भी परवरिश की। अच्छी तरह तर्बीयत करने की कोशिश की। यह लिखती हैं कि मेरे लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के किसी बेटे के रिश्ते के हवाले से बात चली तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया कि यह अच्छा ख़ानदान है। इस घराने से दो बहनें मेरी बहूएं हैं अर्थात एक यह जिनकी वफ़ात का मैं ज़िक्र कर रहा हूँ और एक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबा रहमहुल्लाह अल्लाह की बेगम। फ़रमाया कि यह दो बहनें मेरी बहूएं हैं जो बहुत प्यार करने वाली और ख़ानदान को जोड़ने वाली हैं ।

उनके बेटे लिखते हैं कि मेरी माता बहुत सादा, ग़रीबों का ध्यान रखने वाली और हर किसी के दु:ख सुख में काम आने वाली थीं। ज़रूरतमंदों का दिली एहसास करती थीं। ख़्याल रखती थीं और बड़ी हमदर्द थीं। ग़रीबों की हमदर्द थीं। उनकी बातें सुन कर रोया करती थीं। जिस हद तक मदद हो सकती थी क्या करती थीं। और कोई अतिश्योक्ति नहीं कि उन में यह विशेषताएं थीं। अपने नौकरों के साथ भी बड़ा अच्छा सुलूक करतीं बल्कि उनकी एक बेटी ने लिखा कि किस तरह (उन्हें) बच्चों की तरह पाला कि एक मुलाज़िमा की जब शादी होने लगी तो उसने कहा कि मुझे वैसा ही दहेज़ चाहिए जैसा आपने अपनी बेटी को दहेज़ दिया है और फिर उस के लिए उनको दहेज़ बना के भी दिया।

उनकी तीन बेटियां और एक बेटा है। अल्लाह तआला (के फ़ज़ल से) ये मूसिया भी थीं। कल ही उनका जनाज़ा हुआ है और बहिश्ती मक़बरा में दफ़न हुई हैं। अल्लाह तआला उनकी औलाद को भी अपनी माता की नेकियां अपनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और आपस में भी मुहब्बत और प्यार से रहने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और जमाअत से और ख़िलाफ़त से हमेशा जोड़े रखे।

(अलफ़ज़ल इंटरनेश्नल 24 मई 2019 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

in International Business

अदीलुर्रहमान साहिब पुत्र आदरणीय मक़सूदुर्रहाम साहिब Bachelor in Applied Informatics

तैमूर अहमद सईद साहिब पुत्र आदरणीय मसऊद अहमद सईद साहिब Master of Business Administration

डाक्टर बाजवा नोमान अहमद साहिब पुत्र आदरणीय बाजवा मुहम्मद बूटा साहिब Master in Medicine

सिकदर महमूद साहिब पुत्र आदरणीय सिकदर माहरोफ़ साहिब Bachelor in Computer Sciences

तय्यब अहमद भट्टी साहिब पुत्र आदरणीय नासिर अहमद भट्टी साहिब A Levels - Sciences

अहमद शहज़ाद साहिब पुत्र आदरणीय मंसूर अहमद साहिब A Levels - Sciences & Mathematics

शाह ज़ैन साहिब पुत्र आदरणीय मंसूर अहमद साहिब Bachelor in Civil Engineering

वहीद अहमद साहिब पुत्र आदरणीय वासिफ़ अहमद भट्टी साहिब A Levels - Sciences & Mathematics

मुबय्यन अहमद गुल साहिब पुत्र आदरणीय चौधरी ताहिर गुल साहिब A Levels - Sciences & Mathematics

जाज़िब अहमद साहिब पुत्र आदरणीय इदरीस अहमद साहिब A Levels - Modern Languages & Sciences

मुहम्मद फ़ैज़ान साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद इरशाद साहिब Bachelor of Law लुक़्मान करीम साहिब पुत्र आदरणीय करीमुल्लाह साहिब A Levels - Business Management

अहमद एहसान साहिब पुत्र आदरणीय नूरुद्दीन अहमद साहिब Master of Law एहतिशाम हाश्मी साहिब पुत्र आदरणीय रफ़ीक़ हाश्मी साहिब A Levels -Sciences & Mathematics

ख़ुर्रम शहज़ाद मलिक साहिब पुत्र आदरणीय मलिक मुहम्मद अतहर साहिब Bachelor of Law

राना तलहा साहिब पुत्र आदरणीय राना ज़ुबैर अहमद साहिब Bachelor in Business Management

डाक्टर इदरीस साहिब पुत्र आदरणीय रफ़ीक़ अहमद साहिब Master of Medicine Master in Medical & Pharmaceutical Research सुलतान अहमद बट साहिब पुत्र आदरणीय हुमायूँ बट साहिब Bachelor in Electronic Engineering

तमसील अहमद साहिब पुत्र आदरणीय फ़र्ख़ अहमद साहिब A Levels - Greek & Mathematics

अहमद ज़ीशान मुही उद्धर्म साहिब पुत्र आदरणीय नूरुद्दीन अहमद साहिब Bachelor of Medicine

कृष्ण अहमद साहिब पुत्र आदरणीय अज़ीज़ अहमद साहिब Bachelor of Technology Electronics and Telecom

बहज़ाद इक़बाल साहिब पुत्र आदरणीय परवेज़ इक़बाल साहिब A Levels - Economy & Modern Languages

इमरान सईद साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद सईद साहिब A Levels - Morden Languages and Sceinces

नबील अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब Certified Information Systems Security Professional

तस्लीम अहमद रज़ा साहिब पुत्र आदरणीय नईम ए शाहीन साहिब Master in Industrial Sciences

सरमद अकबर अहमद साहिब पुत्र आदरणीय अकबर अहमद साहिब A Levels - Mordern Languages and Sceinces

मुहम्मद बिलाल ख़ानसाहिब पुत्र आदरणीय मादामे एहसान सिकन्दर साहिब

अनोश इक़बाल साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद इक़बाल साहिब A Levels - Informatics and Netwowrking

तालीमी ऐवार्ड की आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रे-

हिल अज़ीज़ ने मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बेल्जियम में काम करने के लिहाज़ से अव्वल आने वाली मज्लिस मजलिस Antwerpen को इलम इनामी प्रदान फ़रमाया। इस के बाद 4 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना समापन ख़िताब फ़रमाया।

समापन ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

तशह्हुद , ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हम पर अल्लाह तआला का बड़ा एहसान है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई। इस ज़माने में जबकि दुनिया में हर तरफ़ अफ़रातफ़री की अवस्था है, किसी को समझ में नहीं आ रहा कि किस तरफ़ जाएं , किस को अपना रहनुमा बनाएँ, क्या करें जिनसे मुश्किलें दूर हों? ऐसे में अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ दी कि अल्लाह तआला ने इस ज़माने में हमारी रहनुमाई के लिए गुप्त रास्ता दिखाने के लिए ख़ुदा तआला से मिलाने के लिए ,सृष्टि के हक़ अदा करने के लिए , अपने जिस फ़िरिस्तादे को भेजा इसे क़बूल करें। अत: इस क़बूलीयत का हक़ तभी अदा होगा जब हम इस रहनुमा से रहनुमाई हासिल करें। और फिर उस के अनुसार अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारें वर्ना इस क़बूलियत का कोई फ़ायदा नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आजकल हम देखते हैं कि इन्सान ने अपने स्वार्थों की वजह से ख़ुद अपने लिए मुश्किलों और मुसीबतों को जमा किए हुए हैं। इसके इलावा अल्लाह तआला की तरफ़ से भी आफ़ात का सिलसिला बढ़ता चला जा रहा है। कहीं तूफ़ानों ने इन्सानों की बर्बादी के सामान किए हुए हैं तो कहीं अकाल ने इन्सानों को मसीबतों और मुश्किलों में गिरफ़्तार किया हुआ है। जिन सामानों पर इन्सान को भरोसा था वे तबाह हो रहे हैं। अत: ऐसे में एक मोमिन को पहले से बढ़कर अल्लाह तआला की तरफ़ लौटने की ज़रूरत है और जैसा कि मैंने कहा कि अल्लाह तआला का रास्ता दिखाने के लिए अल्लाह तआला ने अपने फ़िरिस्तादे को भेजा है जिन्हों ने विभिन्न तरीक़ों से, विभिन्न माध्यमों से , विभिन्न शब्दों में विभिन्न बातों की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए हमारा मार्ग दर्शन फ़रमाया है। ये रहनुमाई जो अल्लाह तआला और उसके रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं पर आधारित है अगर हम इस पर अमल करने वाले हों तो यह हमें हर किस्म की मुसीबतों से बचाने और हमारी ज़िन्दगी के सामान करने के लिए एक ऐसा माध्यम है जो हमेशा के लिए जारी रहने वाला है और बेहतरीन नतीजे पैदा करने वाला है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस वक़्त में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेश प्रस्तुत करूंगा जो आपने विभिन्न अवसरों पर अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाए और जमाअत से यह आशा रखी कि वह इन उपदेशों के अनुसार अपनी ज़िन्दगियों को ढालने वाली हो और उन में बड़े दर्द से जमाअत को अनुकरण करने की नसीहत फ़रमाई है ताकि वे हमेशा अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हासिल करने वाले बने रहें और मसीबतों और परेशानियों से बचें, उन मुश्किलों और मसीबतों से बचें जो अल्लाह तआला की नाराज़गी की वजह से आती हैं। हक़ीक़ी अहमदी हों और बैअत का हक़ अदा करने वाले हों। तक़्वा पर चलने वाले हों और अल्लाह तआला के और इस के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने वाले हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम अपने मानने वालों में तक़्वा पैदा करने के लिए कितना दर्द रखते थे ताकि उन्हें अल्लाह तआला की नाराज़गी से बचाएं और सच्चा मोमिन बनाएँ इस बात का अंदाज़ा आप के इस उपदेश से होता है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :कल अर्थात 22 जून 1899 ई बहुत बार ख़ुदा की तरफ़ से इल्हाम हुआ कि तुम लोग मुत्तक़ी बन जाओ और तक़्वा की बारीक राहों पर चलो तो ख़ुदा तुम्हारे साथ होगा। फ़रमाया: इस से मेरे दिल में बड़ा दर्द पैदा होता है कि मैं क्या करूँ कि हमारी जमाअत सच्चा तक़्वा तथा पवित्रता धारण कर ले। फिर फ़रमाया कि मैं इतनी दुआ करता हूँ कि दुआ करते करते दुर्बलता का ग़लबा हो जाता है और कई बार बेहोशी और हलाकत तक नौबत पहुंच जाती है। फ़रमाया कि जब तक कोई जमाअत ख़ुदा तआला की निगाह में मुत्तक़ी ना बन जाए, ख़ुदा तआला की सहायता उस के शामिल नहीं हो सकती। फ़रमाया : तक़्वा सार है सारे पवित्र पुस्तकों का और तौरेत और इंजील की शिक्षाओं का। क़ुरआन करीम ने एक ही शब्द में ख़ुदा तआला की महान इच्छा और पूरी रज़ा का इज़हार फ़र्मा दिया। फ़रमाया : मैं इस फ़िक्र में भी हूँ कि अपनी जमाअत में से सच्चे मुत्तक़ियों , धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने वालों और अल्लाह के लिए अलग होने वालों को अलग करूं और कुछ धर्मिक काम उन के सपुर्द करूँ और फिर मैं दुनिया में डूबे रहने वालों और रात-दिन मुर्दा दुनिया की इच्छा में जान खपाने वालों की कुछ भी परवाह ना करूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: इस दर्द को हमें समझना चाहिए। आपकी दुआओं का वारिस बनना है तो इस को समझे बग़ैर और आपकी इच्छा के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारे बग़ैर नहीं बना जा सकता। अत: हर अहमदी को इस दर्द को हमेशा अपने सामने रखना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर मुत्तक़ी की निशानियों के बारे में ब्यान फ़रमाते हुए कि एक मुत्तक़ी की क्या निशानियां होनी चाहिऐं आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: हमेशा याद रखना चाहिए कि हम ने तक़्वा तथा पवित्रता में कहाँ तक तरक़्क़ी की है। इस का स्तर क़ुरआन है। तक़्वा तथा पवित्रता का स्तर क़ुरआन है।अल्लाह तआला ने मुत्तक़ी के निशानों में एक ये भी निशान रखा है कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को दुनिया के घृणित कार्यों से आज़ाद करके उसके कामों का ख़ुद मुतकफ़्फ़िल होजाता है जैसा कि फ़रमाया وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ○ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ- जो शख़्स ख़ुदा तआला से डरता है अल्लाह तआला हर एक मुसीबत में इस के लिए रास्ता मुख़लसी मार्ग निकाल देता है। यह मुहावरा के रूप में अनुवाद है। इस के साथ उसकी व्याख्या फ़र्मा रहे हैं कि जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है अल्लाह तआला हर एक मुसीबत में उस के लिए रास्ता मुख़लिसी का निकाल देता है और इस के लिए ऐसी रोज़ी के सामान पैदा कर देता है कि उसके इलम तथा सोच में भी ना हों अर्थात यह भी एक निशानी मुत्तक़ी की है कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को व्यर्थ की जरूरतों का मुहताज नहीं करता। अकारण की दुनियावी इच्छाएं उसके दिल में पैदा नहीं होतीं। जैसे एक दूकानदार यह ख़्याल करता है कि झूठ बोलने के सिवा उस का काम ही नहीं चल सकता इसलिए वह झूठ बोलने से रुकता नहीं और झूठ बोलने के लिए वह मजबूरी ज़ाहिर करता है। लेकिन यह बात हरगिज़ सच नहीं। ख़ुदा तआला मुत्तक़ी का ख़ुद मुहाफ़िज़ हो जाता है और उसे ऐसे अवसर से बचा लेता है जो ख़िलाफ़ हक़ पर मजबूर करने वाले हूँ। अर्थात जो अवसर सच्चाई बोलने से रोकने वाले हों , जो सच बोलने से रोकने वाले हों अल्लाह तआला उन से मुत्तक़ी को महफ़ूज़ रखता है। फ़रमाया कि याद रखो जब अल्लाह तआला को किसी ने छोड़ा तो ख़ुदा ने उसे छोड़ दिया और जब रहमान ख़ुदा ने छोड़ दिया तो ज़रूर शैतान अपना रिश्ता जोड़ेगा। फ़रमाते हैं ये ना समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है। वह बड़ी ताक़त वाला है। जब इस पर किसी बात पर भरोसा करोगे तो वह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ इस आयत का मतलब यह है कि जो अल्लाह पर तवक्कुल करते हैं वह उन के लिए काफ़ी हो जाता है। फ़रमाया जो इसके पहले मुख़ातिब थे वह धर्म वाले थे। उनकी सारी फ़िक्रें धार्मिक मामलों के लिए थीं। और दुनयावी मामले अल्लाह तआला के भरोसे पर थे। इसलिए अल्लाह तआला ने उनको तसल्ली दी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अत: तक़्वा की बरकत में से एक ये है कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को उन मसीबों से मख़लिसी बख़्शता है जो धर्मिक मामलों में रोक हूं। अत: एक मुत्तक़ी अल्लाह तआला पर तवक्कुल करने वाला होता है और अगर अपने कामों के लिए अपनी चालाकियों और होशयारियों पर ज़्यादा भरोसा हो तो फिर इस में तक़्वा नहीं कहला सकता ।

फिर इस बात को स्पष्ट करते हुए आप अलैहिस्सलाम और अधिक फ़रमाते हैं कि :अल्लाह तआला मुत्तक़ी को प्यार करता है। ख़ुदा तआला की अज़मत को याद कर के सब भयभीत रहो। अल्लाह तआला की बड़ी अज़ीम हस्ती है इस को हमेशा याद रखो और ख़ौफ़ खाते रहो। तुम्हारे दिल में ख़ौफ़ होना चाहिए। ख़ौफ़ इसलिए कि पहले बता दिया कि अल्लाह तआला प्यार करने वाला है। अत: मुत्तक़ी जो है वह सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला की अज़मत को याद करता है और यह ख़ौफ़ रहता है कि अल्लाह तआला मुझ से नाराज़ ना हो जाए। फ़रमाया और याद रखो कि सब अल्लाह के बंदे है। किसी पर ज़ुल्म ना करो। ना तेज़ी करो ना किसी को हीन भावना से देखो। जमाअत में अगर एक आदमी गंदा होता है तो वह सबको गंदा कर देता है। अगर गर्मी की तरफ़ तुम्हारी तबीयत का झुकाव हो तो फिर अपने दिल को टटोलो कि ये गर्मी किस चश्मा से निकली है। यह मुक़ाम बहुत नाज़ुक है।

फिर आप अलैहिस्सलाम इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि इन्सान का हर कर्म ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार होना चाहिए क्योंकि यही हक़ीक़ी नेकी और तक़्वा है लेकिन कब इन्सान का हर कर्म ख़ुदा की मंशा के अनुसार होता है ,फ़रमाते हैं :बात यह है कि जब इन्सान नफ़्स की भावनाओं से पाक होता है और नफ़्सानियत छोड़कर ख़ुदा के इरादों के अंदर चलता है इस का कोई कर्म नाजाइज़

नहीं होता बल्कि हर एक कर्म ख़ुदा की इच्छा के अनुसार होता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अर्थात नफ़्स की भावनाओं से पाक होना , नफ़सानियत छोड़कर ख़ुदा के इरादों के अंदर चलना और ख़ुदा के इरादे क्या हैं वही जिसका पहले ज़िक्र हो गया कि क़ुरआन को देखो , क़ुरआन के अनुसार चलो । जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन में आदेश दिए हुए हैं करने के काम तथा न करने के काम हैं , करने और ना करने के हुक्म हैं , उनको देखो और उन पर अमल करो। फ़रमाया जहां लोग परीक्षा में पड़ते हैं वहां यह बात हमेशा होती है कि वह कर्म ख़ुदा के इरादे से अनुसार नहीं होता। ख़ुदा की रज़ा उस के विरुद्ध होती है। ऐसा शख़्स अपनी भवनाओं के नीचे चलता है। जैसे ग़ुस्सा में आकर कोई ऐसा कर्म उस से हो जाता है जिस से मुक़द्दमे बन जाया करते हैं, फ़ौजदारियाँ हो जाती हैं मगर अगर किसी का यह इरादा हो कि बिला इस्तिसवाब किताबु अल्लाह उस की हरकत तथा सुकून ना होगा। अर्थात अल्लाह तआला की किताब और अल्लाह तआला के हुक्मों को देखे बग़ैर वह कोई काम नहीं करेगा और अपनी हर एक बात पर किताबुल्लाह की तरफ़ रुजू करेगा तो यक़ीनी बात है कि किताबुल्लाह मश्वरा देगी जैसे फ़रमाया وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ. कि कोई सूखी या गीली चीज़ नहीं जिस का वर्णन रोशन किताब में है। अर्थात कोई ऐसी बात है ही नहीं जिसका ज़िक्र क़ुरआन करीम में ना हो। कोई इन्सानी ज़िन्दगी में ऐसा मौक़ा आता ही नहीं या आएगा ही नहीं या उसका इमकान है ही नहीं कि वो ऐसा मौक़ा आए या ऐसी बात हो जिसको अल्लाह तआला ने पहले ही जिसके बारे में करने या ना करने का हुक्म ना दे दिया हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: क़ुरआन करीम में हर एक मोमिन की रहनुमाई है फ़रमाया अत: अगर हम ये इरादा करें कि हम मश्वरा किताबुल्लाह से लेंगे तो हम को ज़रूर मश्वरा मिलेगा लेकिन जो अपनी भावनाओं के अधीन है वे ज़रूर नुक़्सान ही में पड़ेगा। कई बार वे इस जगह सज़ा में पड़ेगा। अत: उस के मुक़ाबला में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वली जो मेरे साथ बोलते चलते काम करते हैं मानो इस में लीन हैं। अत: जिस क़दर कोई लीनता में कम है वह इतना ही ख़ुदा से दूर है। लेकिन अगर उस की लीनता वैसी ही है जैसे ख़ुदा ने फ़रमाया तो उसके ईमान का अंदाज़ा नहीं है। उनकी हिमायत में अल्लाह तआला फ़रमाता है।من عادلی ولیا فقد اٰذنته بالحرب कि जो शख़्स मेरे वली का मुक़ाबला करता है वह मेरे साथ मुक़ाबला करता है। यह हदीस है। अब देख लो के मुत्तक़ी की शान किस क़दर बुलंद है और इस का पाया कितना उच्च है जिसका क़ुरब ख़ुदा की जनाब में ऐसा है कि उसका सताया जाना ख़ुदा का सताया जाना है तो ख़ुदा उस कॉ कितना सहायक तथा मददगार होगा। अत: इन्सान के लिए कोई रास्ता नहीं मसीबतों मुश्किलों से बचने का सिवाए इसके कि ख़ुदा तआला की तरफ़ झुके और ख़ुदा तआला को अपना सहायक तथा मददगार बनाए । हालात ऐसे हों जहां हर तरफ़ इन्सान मुश्किलों में घिरा हो। जंगों के भी ख़तरे हैं। लोग पूछते हैं कि किस तरह बचा जा सकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक शेअर में इस का ज़िक्र कर दिया है।

आग है पर आग से वे सब बचाए जाऐंगे
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुल अजाइब से प्यार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: अल्लाह तआला से प्यार रखना ज़रूरी है। फिर अपनी बैअत में आने के बारे में जमाअत के लोगों को तक़्वा पर चलने की नसीहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: हमारी जमाअत के लिए ख़ासकर तक़्वा की ज़रूरत है। विशेष रूप से इस ख़्याल से भी कि वे एक ऐसे शख़्स से सम्बन्ध रखते हैं और इस के बैअत के सिलसिला में हैं जिसका दावा मामूरियत का है ताकि वे लोग जो चाहे किसी किस्म के द्वेषों हस्दों या शिर्कों में पड़े हुए थे या कैसे ही दुनिया के कीड़े थे इन सारी बुराइयों से नजात पाएं। फ़रमाया आप जानते हैं कि अगर कोई बीमार हो जाए तो चाहे उस की बीमारी छोटी हो या बड़ी अगर इस बीमारी के लिए दवा ना की जाए और ईलाज के लिए दु:ख ना उठाया जाए बीमार अच्छा नहीं हो सकता। एक काला दाग़ मुँह पर निकल कर एक बड़ा फ़िक्र पैदा कर देता है कि कहीं यह दाग़ बढ़ता बढ़ता सो मुँह को काला ना कर दे । इसी तरह गुनाह का भी एक काला दाग़ दिल पर होता है , गुनाहों का कमज़ोरियों का एक दाग़ दिल पर पड़ता है और अगर उस का इलाज ना करोगे तो वह धीरे-धीरे बड़ा होता जाएगा। फ़रमाया कि छोटे (गुनाह) आसान समझने से कबाइर (बड़े) हो जाते हैं जो छोटे छोटे गुनाह हैं अगर उनको तवज्जा नहीं दोगे , सुस्ती दिखाओगे तो वे बड़े गुनाह बन जाते है। ज़ाहिर में जो छोटे लगने वाले गुनाह हैं। फ़रमाया कि वही दाग़ छोटा है जो बढ़कर आख़िर सारे मुँह को काला कर देता है। कुछ कमज़ोरियाँ हैं , कुछ चीज़ें इन्सान समझता है कि कोई बात नहीं मामूली सी चीज़ है। फ़रमाया कि मामूली ना समझो यही बड़ा गुनाह बन जाएगी और फिर जिस तरह एक दाग़ मुँह को स्याह कर देता है यह बड़ा गुनाह बन के तुम्हें स्याह कर देगा। अगर छोटी छोटी बुराईयों और कमज़ोरियों को दूर करने की तरफ़ तवज्जा ना दी तो ये बड़े गुनाह बन जाएंगे और उस की वजह से इन्सान का सारा चेहरा भी काला हो जाएगा। दिल भी काला हो जाएगा। फ़रमाया कि अल्लाह तआला रहीम तथा करीम है वैसा ही क़ह्हार और मुंतक़िम (बदला लेने वाला) भी है। एक तरफ़ तो अल्लाह तआला बड़ा रहम करने वाला है , बहुत करम करने वाला है , बड़ी मेहरबानी करने वाला है , बड़ा नवाज़ने वाला है और दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला बड़ा क़ह्हार भी है। मुंतक़िम भी है। जो गुनाह करने वाले हैं उनको सज़ा भी देता है। फ़रमाया कि एक जमाअत को देखता है कि उनका दावा और बातें तो बहुत कुछ है और उनकी व्यावहारिक अवस्था ऐसी नहीं तो इस का क्रोध तथा ग़ज़ब बढ़ जाता है। दावा यह कर रहे हो कि हम बैअत में आ गए , हम ने ज़माना के इमाम को मान लिया। हम ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को मान लिया , हम ने दुनिया को धर्म सिखाना है , हम ने दुनिया पर इस्लाम के ग़लबा के लिए हर कोशिश करनी है। लेकिन अगर व्यवहार नहीं तो सिर्फ ये मुँह की बातें हैं। फ़रमाते हैं कि फिर तुम अल्लाह तआला के ग़ुस्सा को भड़काने वाले हो। फ़रमाया फिर ऐसी जमाअत की सज़ा देने के लिए वह कुफ़्फ़ार को ही चुन लेता है। फ़रमाया जो लोग तारीख़ से वाक़िफ़ हैं वे जानते हैं कि कई बार मुस्लमान काफ़िरों से कत्ल किए गए। जैसे चंगेज़ ख़ान और हलाकू ख़ान ने मुसलमानों को तबाह किया । हालाँकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से समर्थन और सहायता का वादा किया है। अल्लाह तआला का मुसलमानों से वादा तो यह था कि अगर तुम पर कोई हमला करेगा , तुम्हें कोई नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करेगा तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा लेकिन किया हुआ मुस्लमान काफ़िरों से हार उठाने वाले बन गए। इसलिए कि उनके कर्म नहीं थे। आपने फ़रमाया कि हालाँकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से सहायता और मदद का वादा किया है। लेकिन फिर भी मुस्लमान पराजित हुए। आजकल भी इस ज़माना में हम यही देख रहे हैं। हर मुस्लमान हुकूमत किसी ना किसी रंग में ग़ैर मुस्लिम हुकूमतों के सामने सिर झुकाए हुए है। उनसे मदद के अभिलाषी हैं और उनकी मदद से फिर अपने मुसलमानों को क़त्ल कर रहे हैं , मासूमों को क़त्ल कर रहे हैं। बच्चों को क़त्ल कर रहे है। औरतों को क़त्ल कर रहे है। ये सब क्या है। क्या इस्लाम की यह शिक्षा थी कि मासूमों को क़त्ल करो? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो रहमतुन्न लिल्आलेमीन थे। अब ये नमूने दिखाए जा रहे हैं तो इस का नतीजा क्या निकल रहा है कि फिर ग़ैर मुस्लिम बड़ी हुकूमतें , बड़ी ताक़तें भी उनसे अपनी शर्तें मनवा रही हैं और जो वे चाहती हैं वे करती हैं और उनके जो माध्यम हैं, क़ुदरती वस्तुएं हैं , जो दौलतें हैं उन पर उनका क़ब्ज़ा हो चुका है। फ़रमाया इस किस्म की घटनाएं कई बार हुईं इस का कारण यही है कि जब अल्लाह तआला देखता है कि ज़बान ला-इलाह इल-लल्लाह तो पुकारती है लेकिन उनका दिल दूसरी तरफ़ है और अपने कर्मों से वे बिलकुल दुनिया के कीड़े हैं तो फिर उस का क़हर अपना रंग दिखाता है।

फिर फ़रमाया कि अल्लाह का ख़ौफ़ इसी में है कि इन्सान देखे कि इस की कथनी तथा करनी कहाँ तक एक दूसरे से समानता रखते है। फिर जब देखे कि इस की कथनी तथा करनी बराबर नहीं तो समझ ले कि वह अल्लाह के ग़ज़ब का पात्र होगा। जो दिल नापाक है चाहे कथन कितना ही पाक हो वह दिल ख़ुदा की निगाह में क़ीमत नहीं पाता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह बहुत सोचने वाली बात है , बहुत ग़ौर करने वाली बात है,बहुत फ़िक्र वाली बात है कि अपने दिल को टटोलें । हर एक अपने दिल को टटोल सकता है अगर दिल नापाक है तो फिर जितनी मर्ज़ी अच्छी बातें कर रहे हों ख़ुदा की निगाह में उसकी कोई हैसियत नहीं। फ़रमाया बल्कि ख़ुदा का ग़ज़ब भड़केगा बल्कि यही नहीं कि सिर्फ हैसियत नहीं है अल्लाह तआला के ग़ज़ब को भड़काने वाले होगे। इस से अल्लाह तआला नाराज़ होगा। अत: फ़रमाया अत: मेरी जमाअत समझ ले कि वह मेरे पास आए हैं इसीलिए कि बीज बोया जाए जिस से वह फलदार दरख़्त हो जाएं। अत: हर एक अपने अंदर ग़ौर करे कि इस का अंदरूना कैसा है और इस की भीतरी हालत कैसी है फ़रमाया अगर हमारी जमाअत भी ख़ुदा-न करे ऐसी ही है कि इस की ज़बान पर कुछ है और दिल में कुछ है तो फिर ख़ातिमा बिलख़ैर ना होगा। अल्लाह

तआला जब देखता है कि एक जमाअत जो दिल से ख़ाली है और ज़बानी दावे करती है वह ग़नी है वह परवाह नहीं करता। फ़रमाया कि देखो बदर की फ़तह की पेशगोई हो चुकी थी। हर तरह की फ़तह की उम्मीद थी। अल्लाह तआला का आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वादा था कि में फ़तह दूंगा लेकिन फिर भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रो-रो कर दुआ मांगते थे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह अन्हो ने निवेदन किया कि जब हर तरह फ़तह का वाादा है तो फिर रोने की ज़रूरत किया है ?इतना रोने की ज़रूरत किया है। उतना परेशान होने की ज़रूरत किया है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वो ज़ात ग़नी है अर्थात संभव है कि अल्लाह तआला के वादा में कोई छुपी हुई शर्तें हों कोई ऐसी शर्तें हों जो मुझ पर ज़ाहिर ना हुई हों और या तुम लोगों से बारे में हो और वे पूरी ना हो रही हूँ तो फिर ये ज़रूरी है कि मैं दुआ करूँ और अपनी मानवीय कमज़ोरियों का भी और तुम लोगों की कमज़ोरियों के लिए भी अल्लाह तआला से मदद माँगूं ताकि फ़तह यक़ीनी फ़तह में बदल जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: यह है वह गुर जिसे हमें अपने सामने रखना चाहिए कि हर वक़त ये ख़्याल रहे कि बेशक अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी वादा है कि मैं तेरे साथ हूँ । मैं तुझे ग़लबा दूँगा , तेरी जमाअत को फैलाऊंगा लेकिन इसके साथ ये शर्तें भी हैं कि हमारे कर्म भी उसके अनुसार होने चाहिऐं। अत: हमें यह नहीं समझ लेना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत कर ली,अत: इतना ही काफ़ी है। नहीं! बल्कि इसके साथ कर्म करने पड़ेंगे। अल्लाह तआला की किताब के अनुसार चलने की यथा संभव कोशिश करनी पड़ेगी तभी हम ख़ुदा तआला को राज़ी कर सकते हैं। तभी वह हमें मुश्किलों से निकालने के रास्ते भी दिखाएगा और फिर ऐसे रास्ते दिखाएगा जो हमारी सोच से भी उच्च होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर अख़लाक़ी तरक़्क़ी की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं कि अत: हमारी जमाअत को उचित है कि वह अख़लाक़ी तरक़्क़ी करें क्योंकि اَلْاِسْتِقَامَۃُ فَوْقَ الْکَرَامَۃِ। मशहूर है। वह याद रखें कि अगर कोई उन पर सख़्ती करे तो यथा शक्ति उस का जवाब नर्मी और प्रेम से दें। उग्रता और बलात की ज़रूरत इंतिक़ामी तौर पर भी ना पड़ने दें । किसी किस्म का सख़्ती से जवाब नहीं देना,इंतिक़ाम नहीं लेना। फ़रमाते हैं इन्सान में नफ़्स भी है और उसकी तीन किस्में हैं। अम्मारा , लव्वामा और मुतमइन्ना। अम्मारा की हालत में इन्सान जज़बात और व्यर्थ के जोशों को सँभाल नहीं सकता और अंदाज़े से निकल जाता है और अख़लाक़ी हालत से गिर जाता है। यह नफ़्स-ए-अम्मारा है। ज़रा ज़रा सी बात पर बदला लेने के लिए तैयार हो जाता है , लड़ाईयों के लिए तैयार हो जाता है , गाली देने पर तैयार हो जाता है लेकिन हालत लव्वामा में अपने आपको सँभाल लेता है।

फ़रमाते हैं मुझे एक हिकायत याद आई कि जो सादी ने बूसतां में लिखी है कि एक बुज़ुर्ग को कुत्ते ने काटा। घर आया तो घर वालों ने देखा कि उसे कुत्ते ने काट खाया है। एक भोली-भाली छोटी बच्ची भी वहां थी। वह बोली आपने क्यों नहीं उसे काट खाया? इस बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि बेटी इन्सान से कुतपन नहीं होता यह कुत्ते की फ़ितरत है कि उसने काटना है। इन्सान कुत्ता नहीं ,इन्सान तो इन्सान है। उसने तो अपनी अक़्ल से काम लेना है। फ़रमाया कि इसी तरह से इन्सान को चाहिए कि जब कोई बुरा गाली दे तो मोमिन को लाज़िम है कि मुंह फेर ले नहीं तो वही कुतपन की उपमा सच होगी। ख़ुदा के मुक़र्रिबों को बड़ी बड़ी गालियां दी गई हैं। बहुत बुरी तरह सताया गया मगर उनको اَعْرِضْ عَنِ الْجَاھِلِیْن कि जाहिलों से मुंह फेर लो,उनसे मुँह फेर लू ,उस का ही ख़िताब दिया। ख़ुद इस इन्सान कामिल हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत बुरी तरह तकलीफ़ें दी गईं और गालियां , बदज़ुबानी और शोख़ियाँ की गईं मगर इस ख़लक़ मुजस्सम ज़ात ने उसके मुक़ाबले में क्या-किया ?उन के लिए दुआ की और चूँकि अल्लाह तआला ने वाादा कर लिया था कि जाहिलों से मुंह फेर लेगा तो तेरी इज़्ज़त और जान को हम सही सलामत रखेंगे और ये बाज़ारी आदमी इस पर हमला ना कर सकेंगे। अत: ऐसा ही हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरोधी आपकी इज़्ज़त पर आंच ना ला सके और ख़ुद ही अपमानित हो कर आपके क़दमों पर गिरे या सामने तबाह हुए। अत: ये लव्वामा का गुण है जो इन्सान कश्मकश में भी सुधार कर लेता है। रोज़मर्रा की बात है अगर कोई जाहिल या आवारा गाली दे या कोई शरारत करे जिस क़दर इस से मुंह फेरोगे इस क़दर इज़्ज़त बचा लोगे और जिस क़दर इस से मुड़भेड़ और मुक़ाबला करोगे तबाह हो जाओगे और ज़िल्लत ख़रीद लोगे। फ़रमाते हैं कि नफ़्स-ए-मुतमइन्ना की हालत में इन्सान की फितरत नेकियां और भलाईयां हो जाती हैं। वह दुनिया और अल्लाह के अतिरिक्त सब से मुंह भेर लेता है जब नफ़्स मुतमइन्ना पर पहुंच जाता है तो दुनिया से अपने आपको काट लेता है और यह आख़िरी मुक़ाम है। वह दुनिया में चलता फिरता है और दुनिया वालों से मिलता-जुलता है लेकिन हक़ीक़त में वह यहां नहीं होता जहां वह होता है वह दुनिया दूसरी ही होती है वहां का आसमान और ज़मीन और ही होता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारे अंदर विशेष तबदीली देखने की इच्छा का इज़हार करते हुए फ़रमाते हैं अगर एक आदमी भी ज़िन्दा तबीयत का निकल आए तो काफ़ी है। मैं यह बात खोल कर बयान करता हूँ कि मेरे मुनासिब हाल यह बात नहीं है कि जो कुछ मैं आप लोगों को कहता हूँ मैं सवाब की नीयत से कहता हूँ। नहीं मैं अपने नफ़्स में बहुत अधिक जोश और दर्द पाता हूँ यद्यपि वह कारण नामालूम हैं। कारण मुझे नहीं पता क्या हैं। लेकिन मुझे तुम लोगों के लिए जोश बहुत है। मगर इस में ज़रा भी शक नहीं कि यह जोश ऐसा है कि मैं रुक नहीं सकता । फ़रमाते हैं मैं छुपी हुई तबदीली नहीं देखना चाहता यह नहीं कि छिपी हुई तबदीलियां तुम्हारे अन्दर हूँ। तबदीलियां ऐसी हूँ जो ज़ाहिर हूँ, जो रोशन हूँ। जो नज़र आएं। फ़रमाया स्पष्ट तबदीली का इच्छुक हूं ताकि मुख़ालिफ़ शर्मिंदा हूँ और लोगों के दिलों पर एक पक्ष से रोशनी पड़े और वह नाउम्मीद हो जाए कि यह मुख़ालिफ़ अंधकार में पड़े है। दुनिया को मुख़ालफ़ीन को ऐसी तबदीली नज़र आए। अहंकार पैदा करने के लिए नहीं बल्कि इस्लाम के प्रकाशन के लिए। इस्लाम की तब्लीग़ के लिए। अपनी व्यावहारिक नमूने दिखाने के लिए । दुनिया को ये बताने के लिए कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आए हैं तो हमारे अंदर पवित्र तबदीलियां पैदा हुई हैं ताकि लोगों को भी इस तरफ़ आने का रुजहान पैदा हो।

फिर आप फ़रमाते हैं जमाअत को आख़िरत पर नज़र रखनी चाहिए। देखो लूत इत्यादि क़ौमों का क्या अंजाम हुआ? हर एक को लाज़िम है कि दिल अगर सख़्त भी हो तो इस को बुरा भला कह कर विनय तथा विनम्रता का सबक़ दे। अगर किसी का दिल बहुत ही सख़्त है तब भी तुम लोग इस को समझाओ कि ये ग़लत बातें हैं जो अल्लाह तआला को नाराज़ करने वाली हैं उनसे बचना चाहिए । हमारी जमाअत के लिए बहुत ज़रूरी है क्योंकि उनको ताज़ा मार्फ़त मिली है। दुनिया को समझाना , अक़्ल देना और आग में गिरने से बचाना, तबाह होने से बचाना ये हमारी जमाअत का काम है। इसलिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से हमें वे मार्फ़त प्रदान हुई है जो निसन्देह चौदह सौ साल पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती पर क़ुरआन करीम की सूरत में उत्तरी थी लेकिन इस को मुसलमानों के कर्म ने छिपा दिया था और यह मार्फ़त हमें फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ज़माने में निखार कर प्रदान फ़रमाई है। फ़रमाया कि अगर कोई दावा तो मार्फ़त का करे मगर इस पर चले नहीं तो ये निरी मुंह की बातें ही है।

इस लिए हमारी जमाअत दूसरों की ग़फ़लत से ख़ुद ग़ाफ़िल ना रहे और उनकी मुहब्बत को ठण्डा देख कर अपनी मुहब्बत को ठंडा ना करे। इन्सान बहुत तमन्नाएं रखता है। भविष्य की क़ज़ा तथा क़दर की किस को ख़बर है कब क्या वक़्त आ जाना है। आरज़ूओं के अनुसार ज़िन्दगी कभी नहीं चलती ये कभी नहीं हुआ कि इन्सान जो इच्छा करे इस इच्छा के अनुसार ज़िन्दगी हो। इच्छाओं का सिलसिला और है और क़ज़ा तथा क़दर का सिलसिला और है। इन्सान बड़ी ख़्वाहिशें रखता है कि मेरी इतनी उम्र हो, उतनी ज़िन्दगी पाऊं और दुनिया में इतना रहूं लेकिन अल्लाह तआला के अपने फ़ैसले हैं वह उस के अनुसार चलता है और यही सिलसिला सच्चा है जो अल्लाह तआला के फ़ैसले हैं वही सच निकलते हैं और इन्सान की आरज़ूऐं ख़त्म हो जाती हैं, ग़लत हो जाती हैं , झूठ हो जाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर हुकूमत के क़ानून और प्राय अख़लाक़ के बारे में भी आप अलैहिस्सलाम ने जमाअत को नसीहत फ़रमाई । आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हर एक से नेक सुलूक करो। एक अहमदी के लिए उच्च अख़लाक़ भी एक बहुत ज़रूरी चीज़ है और ये उच्च अख़लाक़ ही हैं जो दुनिया पर एक नमूना भी ज़ाहिर करते हैं। फ़रमाया हर एक से नेक सुलूक करो। हुक्काम की आज्ञापालन और वफ़ादारी हर मुसलमान का फ़र्ज़ है। वे हमारी हिफ़ाज़त करते हैं और उन्होंने हर किस्म की मज़हबी आज़ादी हमें दे रखी है। मैं इस को बड़ी बेईमानी समझता हूँ कि गर्वनमैंट की इताअत और वफ़ादारी सच्चे दिल से ना की जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: यहां

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 6 June 2019 Issue No. 23

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

आने वाले लोग जिनकी यहां की हुकूमत हिफ़ाज़त भी कर रही है। अभी चीफ़ पुलिस इन्सपैक्टर ने भी जिस तरह ज़िक्र किया कि उनके दिल में मुसलमानों के व्यवहार से एक दूरी पैदा हुई थी लेकिन फिर अहमदियों को देखकर वह दूर हो गई और आज उन के दिल में इस्लाम की क़दर है और इसी वजह से वे मुसलमानों की हिफ़ाज़त भी करना चाहते हैं , अहमदियों की हिफ़ाज़त करना चाहते हैं और हर किस्म का समर्थन करना चाहते हैं। अत: उमूमी तौर पर हुकूमत के लोग जो ये काम कर रहे हैं, यहां रहने वालों को services दे रहे हैं, ख़िदमें दे रहे हैं इस की मांग है कि हम क़ानून के पाबंद हों और उन हुक्काम की इताअत करें। यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से चाहते हैं। मैंने शायद इन्सपैक्टर कहा था। ये पुलिस कमिशनर हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर प्रत्येक से हमदर्दी के बारे में और उच्च अख़लाक़ का नमूना दिखाने के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: मेरी तो यह हालत है कि अगर किसी को दर्द होता हो और मैं नमाज़ में व्यस्त हूँ और मेरे कान में उनकी आवाज़ पहुंच जाए तो मैं तो यह चाहता हूँ कि नमाज़ तोड़ कर भी अगर उस को फ़ायदा पहुंचा सकता हूँ तो फ़ायदा पहुंचाऊं और जहां तक मुम्किन है इस से हमदर्दी करूँ। यह अख़लाक़ के ख़िलाफ़ है कि किसी भाई की मुसीबत और तकलीफ़ में इस का साथ ना दिया जाए। अगर तुम कुछ भी इस के लिए नहीं कर सकते तो कम से कम दुआ ही करो। अपने तो छोड़ो मैं तो यह कहता हूँ कि ग़ैरों और हिंदूओं के साथ भी उच्च अख़लाक़ का नमूना दिखाओ और उनसे हमदर्दी करो। खलंडरपन वाला मिज़ाज हरगिज़ नहीं होना चाहिए। फिर आप अलैहिस्सलाम ने अपना एक घटना बयान फ़रमाई कि एक बार बाहर सैर को जा रहा था। एक पटवारी मेरे साथ थे। वह थोड़ा आगे थे मैं पीछे था। रास्ता में एक बढ़िया कोई सत्तर पछहतर साल की मिली, बूढ़ी औरत थी। उसने एक ख़त उस पटवारी को पढ़ने को दिया मगर उसने इसको झिड़कियां देकर हटा दिया। मेरे दिल पर एक तरह की चोट सी लगी। उसने वह ख़त मुझे दिया मैं इस को लेकर ठहर गया और इस को पढ़ कर अच्छी तरह समझा दिया। इस पर इस पटवारी को बहुत शर्मिंदा होना पड़ा क्योंकि ठहरना तो पड़ा और सवाब से भी महरूम रहा। अत: उच्च अख़लाक़ का यह तक़ाज़ा है कि हर ग़रीब से ग़रीब की भी ख़िदमत की तरफ़ हमें ध्यान रखना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आख़िर पर मैं आपका एक और हवाला प्रस्तुत करूँगा जिसमें आप अलैहिस्सलाम ने बड़ी दर्द भरी नसीहतें फ़रमाई हैं। आप फ़रमाते हैं: जो आदमी अपने पड़ोसी को अपने अख़लाक़ में तबदीली दिखाता है कि पहले क्या थे और अब किया है वह मानो एक करामत दिखाता है। इस का असर पड़ोसी पर बहुत उच्च दर्जा का पड़ता है। हमारी जमाअत पर एतराज़ करते हैं कि हम नहीं जानते कि क्या तरक़्क़ी हो गई है और आरोप लगाते हैं कि यह लोग तो झूठ और क्रोध इत्यादि में पीड़ित हैं। क्या ये उन के लिए नदामत का कारण नहीं है कि इन्सान उम्दा समझ कर इस सिलसिला में आया था जैसा कि एक रशीद बेटा अपने बाप की नेकनामी ज़ाहिर करता है क्योंकि बैअत करने वाला बेटा के हुक्म में होता है। अत: अगर इन ग़ैरों का यह झूठ ठीक है तो बैअत करने वालों के लिए शर्म की बात है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जैसे कि एक नेक बेटा , एक नेक बच्चा , किसी का एक लड़का जो अपने बाप की नेकनामी प्रकट करता है क्योंकि बैअत करने वाला बेटे के हुक्म में होता है। जब बैअत कर ली तो इसी तरह हो गए जिस तरह तुम किसी बाप के बेटे बन गए। इस लिए आँ हज़रत की पत्नियों को उम्माहातुल मोमनीन कहा है मानो कि हुज़ूर समस्त मोमिनीन के बाप हैं। आप अलैहिस्सलाम ने यह वज़ाहत फ़रमाई कि जिस्मानी बाप ज़मीन पर लाने का कारण होता है , इस की वजह से अर्थात औरत और मर्द के मिलाप की वजह से बच्चा पैदा होता है और एक इन्सानी रूह और जिस्म ज़मीन पर आती है और ज़ाहिरी ज़िन्दगी का कारण बनता है मगर रुहानी बाप आसमान पर ले जाता और रुहानी बाप उस मर्कज़ी असल की तरफ़ रहनुमाई करता है। वह अल्लाह तआला की तरफ़ उस को ले कर जाता है और वही असली मर्कज़ है जिसकी तरफ़ वह रहनुमाई करता है। फ़रमाया कि क्या आप पसन्द करते हैं कि कोई बेटा अपने

पृष्ठ 1 का शेष

होंगे। उनकी रातें ज़िक्र और फ़िक्र में गुज़रती थीं और उनकी ज़िन्दगी कैसे व्यतीत होती थी? क़ुरआन करीम की यह आयत उनके ज़िन्दगी के तरीका का पूरा नक़्शा खींच कर दिखाती है।

وَمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ (अन्फाल: 64)

और يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۔الآیۃ (आले इम्रान: 201) और सरहद पर अपने घोड़े बाँधे रखू कि ख़ुदा के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन उस तुम्हारी तैयारी और इस्तिदाद से डरते रहीं। ए मोमिनो ! सब्र और मुसाबरत और मराबतत करो।

(मफूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 44 से 44)

बाप को बदनाम करे , वेश्या के यहाँ जाए और जुआ खेलता रहे। शराब पीए या और ऐसे बुरे कर्म का करने वाला हो जो बाप की बदनामी का कारण हूँ। अगर कोई बाप पसंद करता है कि उसके बेटे में ये सारी बुराईयां हों। फ़रमाया कि मैं जानता हूँ कि कोई आदमी ऐसा नहीं हो सकता जो इस कर्म को पसंद करे लेकिन जब वह ख़राब बेटा ऐसा करता है तो फिर जन साधारण की ज़बानबंद नहीं हो सकती लेकिन अगर ऐसा बेटा कोई ऐसी हरकतें करे और लोगों को पता हो तो फिर तुम लोगों की ज़बानें बंद नहीं कर सकते। वे बेटे में भी और बाप में भी बुराईयां निकालेंगे,कीड़े निकालेंगे। बाप को भी बदनाम करेंगे। लोग उस के बाप की तरफ़ तुलना कर के कहेंगे कि ये अमुक आदमी का बेटा अमुक बुरा काम करता है। अत: वह नालायक बेटा ख़ुद ही बाप की बदनामी का कारण हो जाता है। इसी तरह पर जब कोई आदमी एक सिलसिला में शामिल होता है और इस सिलसिला की अज़मत और इज़्ज़त का ख़्याल नहीं रखता और उसके ख़िलाफ़ करता है तो वह अल्लाह तआला के निकट पकड़ के योग्य होता है। फिर वह अल्लाह तआला की पकड़ में आ जाएगा। वह सिर्फ अपने आप को ही हलाकत में नहीं डालता बल्कि वह दूसरों के लिए एक बुरा नमूना हो कर उनको सआदत और हिदायत की राह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: ये बात याद रखें कि तक़्वा दिलों में पैदा हो। हम ने अपने दिलों को पाक करना है। दिलों को पाक कर के अपने व्यावहारिक नमूनों से , अपने माहौल को इस्लाम की ख़ूबीयों के बारे में बताना है , अपने घरों के माहौल को पाक साफ़ रखना है। अपने अख़लाक़ को उच्च करना है। हर एक को अपनी हस्ती से तकलीफ़ पहुंचाने की बजाय सविधा और आसानियां पहुंचाने के सामान करने हैं और हर आदमी तक इस्लाम और अहमदियत का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंचाना है। अल्लाह तआला इस की सबको तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और हम सब अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार , हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले हूँ और हम कभी उन लोगों में शामिल ना हों या हमारी तरफ़ लोग इस तरह इशारा ना करें कि अहमदी हो कर उन्होंने अहमदियत को बदनाम कर दिया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के नाम को बदनाम कर दिया है। अल्लाह तआला हमें हमेशा तक़्वा पर चलने वाला बनाए रखे और उन सारी दुआओं का वारिस बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों के लिए की हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा की हाज़री का ऐलान करते हुए फ़रमाया: उनकी कुल हाज़िरी 3878 है और 24 देशों की यहां नुमाइंदगी है। इन देशों की नुमाइंदगी की वजह से उनकी संख्या इतनी हो गई है। बेल्जियम के लोगों की जो हाज़िरी है वह लगभग 1750 है और 2300 मेहमान हैं। छोटी जमाअतों में यही होता है कि मेहमान मुक़ामी लोगों से बढ़ जाते हैं। बहरहाल अल्लाह तआला सब हाज़रीन को उन तमाम दुआओं का वारिस बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद आने की हैं और ख़ैरीयत से आप लोगों को अपने घरों में लेकर जाए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad